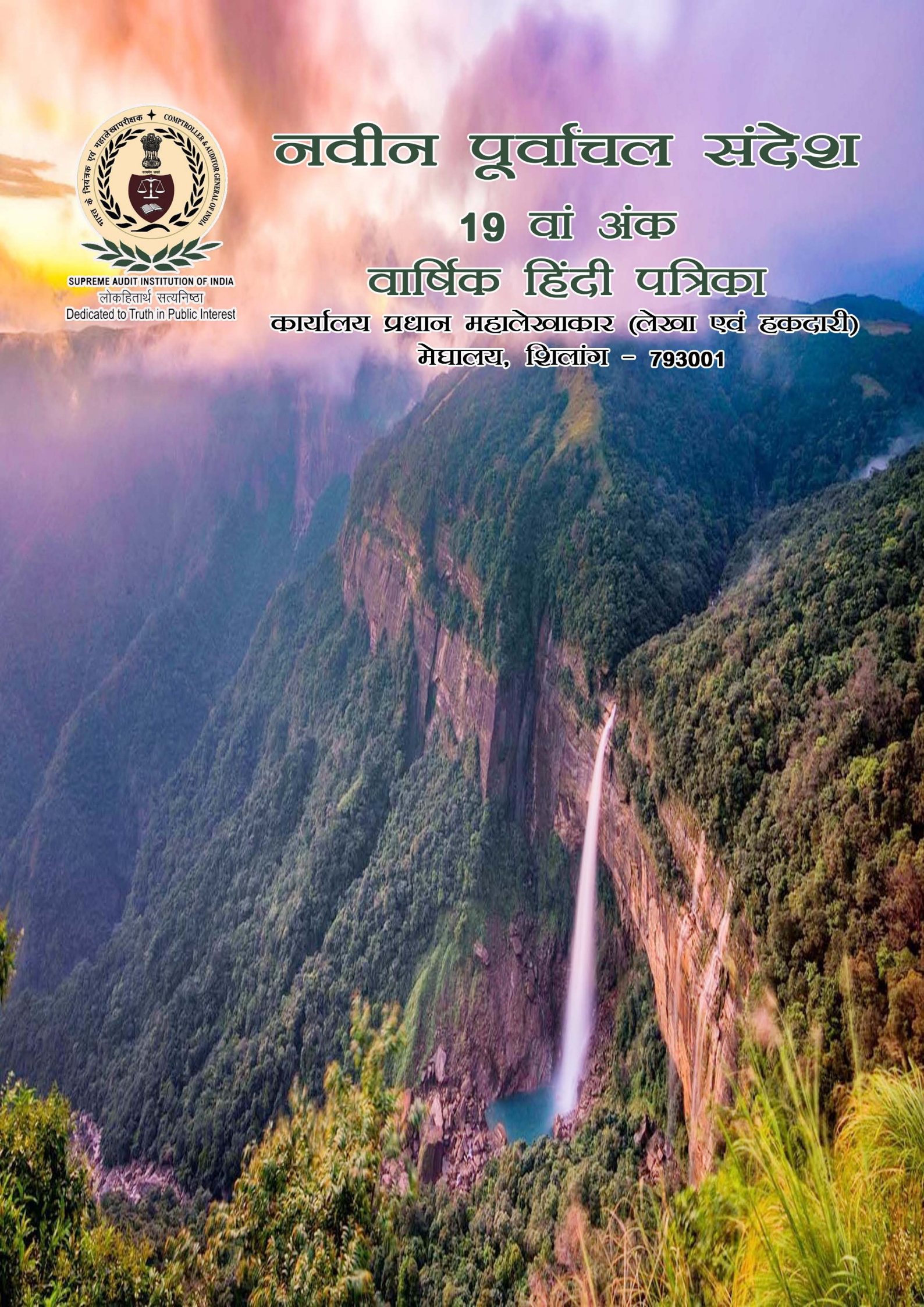

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नवीन पूर्वांचल संदेश

19 वां अंक

वार्षिक हिंदी पत्रिका

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग – 793001

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2023 का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से करते हुए मुख्य अतिथि महोदया सहित प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) महोदय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदया, एवं समस्त समूह अधिकारीगण

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2023 के अवसर पर श्रोताओं को संबोधित करते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) महोदय

"नवीन पूर्वांचल संदेश"

वार्षिक पत्रिका : 19 वां अंक

पत्रिका परिवार

~ संरक्षक ~

श्री केल्विन हैरिस खारशींग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

मेघालय, शिलांग

~ प्रधान संपादक ~

श्री रातुल चन्द्र बरा

उप महालेखाकार

~ परामर्शदाता ~

श्री राज्यपाल देवकोटा

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

~ संपादक मंडल ~

श्रीमती स्निग्धा फुकन, हिंदी अधिकारी

श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ अनुवादक

श्रीमती विजय लक्ष्मी एस., कनिष्ठ अनुवादक

आवरण पृष्ठ : नोहकालिकाई जलप्रपात, चेरापूंजी, मेघालय

नोटः पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विचार रचनाकारों के निजी हैं, उससे संरक्षक, प्रधान संपादक, परामर्शदाता अथवा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

"नवीन पूर्वांचल संदेश"

वार्षिक पत्रिका : 19 वां अंक

वर्ष : 2024

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख/रचना	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ
1.	श्रीमंत शंकरदेव (उनका जीवन और सामाजिक सुधार के लिए कार्य)	श्री रातुल चंद्र बरा	22-24
2.	एक छोटी सी अधूरी कहानी	श्री राज्यपाल देवकोटा	25-26
3.	शिलांग शहर का पर्यटन	सुश्री स्नेहा घटक	27-29
4.	हिंदी	श्रीमती मेघा रानी	30
5.	चार धाम यात्रा वृत्तान्त	श्री गणेश प्रसाद शर्मा	31
6.	सुकून	श्री राज्यपाल देवकोटा	32
7.	करुणा का एक कार्य	श्री स्वास्तिक बी रसाईली	33
8.	याद मेरे घर की	सुश्री शिवानी छेत्री	34
9.	पहला प्यार	श्री भगीरथ प्रसाद	35
10.	कुंठा	श्री अशोक कुमार	36
11.	घर से दूर एक परिवार	श्रीमती आकांक्षा पटेल	37
12.	कोट्टनकुलंगरा देवी मंदिर	श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.	38-40
13.	परिवर्तन	श्रीमती आकांक्षा पटेल	41
14.	निश्चय	श्री राज्यपाल देवकोटा	42
15.	प्रशंसा	श्री भगीरथ प्रसाद	42
16.	प्राकृतिक आपदाएँ : चिंतन	श्रीमती अखिलेश कुमारी	43
17.	मेरा मेघालय सैरसपाटा	अंशुमान शर्मा	44-45
18.	प्रार्थना	सुश्री ब्रेंडा शानेन सियेम	45
19.	बेफिक्री वाला ऐतवार	श्रीमती रेनु नागल	46
20.	अभी बाकी है	सुश्री दिव्या कुमारी राय	47

21.	समानता	श्री राजु नागल	48
22.	पेरिस ओलंपिक 2024	श्री घनश्याम कुमार	49-50
23.	आसान नहीं है नारी होना	श्री गौतम वर्मा	51
24.	प्रकृति	श्री सुरेंद्र कुमार	51
25.	मेरी जन्मभूमि	सुश्री ग्रेसी हातनेव वाइफेई	52
26.	रस्सी जल गई पर बल ना गया	सुशांत बी रसाईली	53
27.	नारायण भक्ति	श्रीमती मेघा रानी	54
28.	हिंदी की पुकार	श्री विजय कुमार	55
29.	चित्रांकन, मिसाइलमैन ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	सुश्री मधुश्री देब	56
30.	चित्रांकन, प्राकृतिक वातावरण से आच्छादित घर	सुश्री तनुश्री दे	57
31.	विकास और प्रकृति	सुश्री ग्रेसी हातनेव वाइफेई	58-59
32.	रिश्ता किताबों से	श्री अनीश कुमार	59
33.	गुरुवाणी	श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.	60
34.	जीवन	श्रीमती वीणा कुमारी राय	61
35.	मां की यादें	श्री घनश्याम कुमार	62
36.	रूस और युक्रेन के बीच महायुद्ध	श्री राहुल ढाका	63
37.	असम के चराईदेव मोईदाम	श्रीमती स्निग्धा फुकन	64-65

अनमोल विचार

1. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है : **महात्मा गांधी**

2. मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता : **आचार्य विनोबा भावे**

3. जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता : **डॉ. राजेंद्र प्रसाद**

4. हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है : **राहुल सांकृत्यायन**

5. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है : **सुमित्रानंदन पंत**

6. सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है : **जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर**

7. प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती : **सुभाषचंद्र बोस**

8. हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है : **विलियम केरी**

9. हिंदी आम बोलचाल की 'महाभाषा' है : **जॉर्ज ग्रियर्सन**

10. भारत की भाषाएं नदियाँ हैं और हिंदी महानदी : **गुरू रवींद्रनाथ टैगोर**

हिंदी दिवस 2024

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)

हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, 14-15 सितंबर 2024

राजभाषा हीरक जयंती

भारत मंडपम, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

संदेश

इस कार्यालय की वार्षिक हिंदी **ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश'** का **19 वां अंक** आप सभी सुधी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। भाषा मानवीय संस्कृति, सभ्यता और सामाजिकता का मूलाधार है। भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है। भाषा किसी भी देश की धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक परिवेश को जानने का सशक्त माध्यम होती है। हिन्दी संपूर्ण राष्ट्र की संवेदनाओं को प्रकट करने का सरलतम व अनूठा माध्यम है।

राष्ट्र-निर्माण में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा और राष्ट्र दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। आज राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का वटवृक्ष निरंतर बढ़ रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा के विकास में हम अपना योगदान देने में समर्थ रहे हैं तथा अपने कार्यालय के रचनाकारों की सहायता से भविष्य में भी इस पथ पर अग्रसर रहेंगे।

पत्रिका को सफल बनाने वाले सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(केल्विन हैरिस खारशींग)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

सत्यमेव जयते

संदेश

अपने कार्यालय की वार्षिक हिंदी **ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश'** का **19 वां अंक** आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे आनन्द की अनुभूति हो रही है ।

कोई भी भाषा किसी भाषा की प्रतिद्वंदी नहीं होती है। भाषाएं सहज प्रवाहवान होती हैं । हिंदी न केवल भारत बल्कि विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। इसकी सहजता, सरलता, एवं वैज्ञानिकता ही इसे अन्य भाषाओं से अलग करती है। हिंदी की विकास यात्रा में पत्रिका का सक्रिय योगदान सराहनीय है। विभागीय पत्रिकाएं, कार्यालय की गतिविधियों की जानकारी देने एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के साथ - साथ, कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को अपनी सर्जनात्मक क्षमता व प्रतिभा को निखारने हेतु एक मंच प्रदान करती है।

मैं सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रति अपने प्रेम का परिचय देते हुए इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग प्रदान किया है।

पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य अवगत कराएं ताकि पत्रिका को और अधिक सुन्दर एवं बेहतर बनाया जा सके ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।

(रातुल चन्द्र बरा)
उप महालेखाकार
एवं प्रधान संपादक
'नवीन पूर्वांचल संदेश'

संपादकीय...

कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का **19** वां अंक आपके कर कमलों में है। उच्च अधिकारियों के सम्यक दिशा निर्देश, राजभाषा विषयक व कार्यालयीन लेखों की राजभाषा कार्यान्वयन हेतु उपादेयता, विविध समसामयिक, साहित्यक विधाओं में लालित्यपूर्ण तथा प्रेरक रचनाओं के रचनाकारों के यथेष्ट सहयोग के फलस्वरूप पत्रिका का स्तर ऊंचा हुआ है। पत्रिका आज जिस पायदान पर है उसका श्रेय आप सभी को जाता है। हम उन रचनाकारों को इसी माध्यम से धन्यवाद देते हैं जो हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी आदर भाव रखते हैं।

सदियों से भारतीयों को अपने संघर्ष हेतु एकजुट करने एवं प्रतिष्ठित स्थान दिलाने में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज हिंदी विश्व पटल पर अपनी महत्ता का परिचय दे रही है। इस पत्रिका के कुछ लेखकों व रचनाकारों की मातृभाषा हिंदी नहीं है फिर भी वे हिंदी भाषी अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ काम करते हुए न केवल वे हिंदी भाषा बोल और समझ रहे हैं बल्कि हिंदी साहित्य में भी वे अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति के रूप में कलमबद्ध कर रहे हैं। यह पत्रिका चंपू है, जिसमें विभिन्न प्रकार के लेखों और रचनाओं का संकलन किया गया है ।

सुधी पाठकों से सादर अनुरोध है कि इस पत्रिका के संबंध में वे अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं। 'नवीन पूर्वांचल संदेश' की यात्रा अनवरत इसी तरह चलती रहे, इसी आशा और विश्वास के साथ सबको बधाई और धन्यवाद देते हुए यह अंक आपके समक्ष सादर प्रस्तुत है।

हार्दिक शुभेच्छाओं सहित।

हिंदी प्रकोष्ठ,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

Firefox https://email.gov.in/#1

From: "CHITRA V" <chitrav.tmn.au@cag.gov.in>
To: "AGAE MEGHALAYA" <agaemeghalaya@cag.gov.in>
Sent: Friday, October 27, 2023 2:43:04 PM
Subject: वार्षिक हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक का प्रशंसा पत्र

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "**नवीन पूर्वांचल संदेश**" के 18वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । हार्दिक धन्यवाद ।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, उत्कृष्ट एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरणपृष्ठ बेहद आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित महत् व्यक्तियों के अनमोल विचार भी प्रेरणाप्रद हैं। श्री.आनंद कौशल का लेख "पश्चाताप" , श्री. राजू नागल का लेख " महिलाओं की स्थिति " एवं सुश्री.स्निग्धा फुकन का लेख " जुनबिल मेला-पारंपरिक विनिमय प्रथा" विशेष सराहनीय हैं । सभी रचनाकार एवं पत्रिका के सुंदर संपादन के लिए संपादक मंडल प्रशंसा के पात्र हैं । पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं ।

(वी. चित्रा)
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

From: "AGAE MEGHALAYA via Cag-all-users" <cag-all-users@lsmgr.nic.in>
To: "cag-all-users" <cag-all-users@lsmgr.nic.in>
Sent: Friday, October 20, 2023 4:12:47 PM
Subject: [Cag-all-users] वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका " नवीन पूर्वांचल संदेश के 18वें अंक का प्रेषण"

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date

1 of 2 10/30/2023, 10:30 AM

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-हि.क./समीक्षा/23-24/ /)- दिनांक: 30/10/2023

सेवा में,

उप महालेखाकार(प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग-793001

विषय:- वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का 18वाँ अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री नीरज कुमार गुप्ता की "मृत्यु", श्री विजय कुमार की "आत्मविश्वास", श्री आनंद कौशल की "पश्चाताप", सुश्री स्निग्धा फुकन की "जुनबिल मेला- पारंपरिक विनिमय प्रथा" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया

(एकता)
हिंदी अधिकारी

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date

File No. स/हादी/अनुभाग/प्रतिक्रिया/20/2023-24 (Computer No. 93449)

I/427347/2023

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/20/2023-24/जा.क्र.52
दिनांक: - 30/10/2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),
मेघालय, शिलांग
विषय:-हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें ई-अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री विजय कुमार, सहायक लेखा अधिकारी की रचना "आत्म विश्वास", श्री राजू नागल, डी ई ओ का लेख "मैं हिंदी हूँ" श्री नीरज कुमार गुप्ता, डी ई ओ की रचना "भय बनाम साहस" आदि उल्लेखनीय हैं ।

पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई । पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय ,
हस्ता/-
हिंदी अधिकारी

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date

1

Generated from eOffice by NAYANA KUMARI ISSAR, JHT-HINDI CELL-NAI, JUNIOR TRANSLATOR, AG-(AUDIT-II)-MAHARASHTRA on 30/10/2023 05:06 PM

प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा का कार्यालय, बेंगलौर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

दिनांक - 26/10/2023

सेवा में,

उप - महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),
मेघालय, शिलांग - 793001

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई - पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 18 वां अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,
हिन्दी अधिकारी

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date

प्रधान महालेखाकार (ले॰ व हक) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लॉट सं॰ 4 व 5, सैक्टर 33-बी, चंडीगढ़-160020
टेलीफोन नं॰ 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं॰ 0172-2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA, CHANDIGARH-160020 EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824
E mail- agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2023-24/180
दिनांक: 02.11.2023

सेवा में

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.),
मेघालय, शिलांग ।

महोदय/महोदया,

विषय : वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 18वें अंक के प्रेषण के सम्बन्ध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 19.10.2023 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 18वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं । पत्रिका में समाविष्ट सुश्री स्निग्धा फुकन का लेख 'जुनबिल मेला - पारंपरिक विनिमय प्रथा', श्री हेमलाल परियार का लेख 'स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गयी कर्मयोग की 10 शिक्षाएं' एवं श्री पार्थ ज्योति दे का लेख 'कोंगथोंग गाँव : मेघालय का एक अनूठा गाँव' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं ।

इसके अतिरिक्त श्री नीरज कुमार गुप्ता की कविता 'भय बनाम साहस', श्री विशाल छेत्री की कविता 'मातृभाषा', श्री सिध्दार्थ कुमार की कविता 'मनभावन', श्री राज्यपाल देवकोटा की कविता 'मन' एवं सुश्री प्रिया साव की कविता 'लकीरें' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह

हिंदी अधिकारी

Scanned with ACE Scanner

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल
Indian Audit And Accounts Department
Accountant General (A&E), West Bengal

संख्या/ No. प्रशा. हिंदी सेल/पत्रिका/2022-23/166

दिनांक/ Dated. 03.11.2023

सेवा में,

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक)),
मेघालय
शिलांग - 793 001

विषय: कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की पावती एवं अभिमत ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा गृह पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश" 18वें अंक** की एक ई - प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई । एतदर्थ धन्यवाद !

पत्रिका के आवरण-पृष्ठ पर प्रकाशित छायाचित्र एवं पृष्ठों की साज-सज्जा बहुत ही सुंदर है, साथ ही साथ पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी राजभाषा गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छी लगी । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं । विशेषकर श्री [illegible] परियार की कविता "कवि द्वारा पाठकों को अनुशासन" में विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत न छोड़ने की शिक्षा दी है । श्री नीरज कुमार गुप्ता की कविता "मृत्यु" मनोरम लगी । श्री अशोक कुमार के लेख "सफल अनुवादक के लक्षण" में इस कार्य से जुड़ी बारीकियों की ओर ध्यान आकर्षित किया है । श्री पार्थ ज्योति दे का लेख "कोंगथोंग गाँव: मेघालय का एक अनूठा गाँव" रोचक लगी । इसके अलावा श्री आनंद कौशल की कहानी "पश्चाताप", सुश्री प्रिया साव की कविता "लकीरें", श्री सुरेन्द्र कुमार की कविता "मोहब्बत - ए- नौकरी" आदि रचनाएं अत्यन्त ही सराहनीय हैं ।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

चन्दन कुमार बड़ई
हिन्दी अधिकारी/प्रशा. हिंदी सेल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्नमेंट प्लेस, वेस्ट, कोलकाता - 700 001
Treasury Buildings, 2, Government Place West, Kolkata - 700 001
Phone: (033) 2213 8000, Fax: (033) 2248-7849
e-mail: agaewestbengal@cag.gov.in Web Site: http://agwb.cag.gov.in

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

पत्रांक - क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2023-24/379 **दिनांक : 3 .11.2023**

सेवा में,

उपमहालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हकदारी),
शिलांग-79300

विषय:- हिंदी पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 18वें अंक की पावती।

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 20.10.2023

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 18वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सादर धन्यवाद ।

पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं उच्च स्तर की एवं प्रशंसनीय हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है। समस्त रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। रचनाकारों की प्रस्तुति सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहे हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
पश्चिम बंगाल
2. गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

सं. हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/पावती/213
दिनांक: 06.11.2023

सेवा में,

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), मेघालय
शिलांग - 793001

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की पावती संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय का पत्रांक हिंदी प्रकोष्ठ/30/हिंदी पत्रिका/2021/294 , दिनांक 19.10.2023 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की प्रति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा काफी सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी – 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 029

पत्र सं.हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2023-24 | 203 दिनांक: 02.11.2023

सेवा में,
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
मेघालय, शिलांग- 793001

03 NOV 2023

संदर्भ:- हिंदी प्रकोष्ठ/30/हिंदी पत्रिका/2021/294 दिनांक-19.10.2023

विषय: हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की समीक्षा

महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री विजय कुमार, सहायक लेखा अधिकारी की कविता "आत्म विश्वास", श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ अनुवादक का लेख "सफल अनुवादक के लक्षण" तथा श्री सुरेन्द्र कुमार, स्टेनोग्राफर की कविता "मोहब्बत-ए-नौकरी" प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक Date 9/11/23/241

भवदीय

हिंदी अधिकारी

Tele (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX :0361-2303142/2305901
E-mail:agaeassam@cag.gov.in

भारत सरकार/GOVT.OF INDIA
कार्यालय : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)ओडिशा, भुवनेश्वर- 751001
O/O THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA,BHUBANESWAR-751001

स.हि.अनु./प.प्रति./2023/205 दिनांक: 06/11/2023

सेवा में,
उप महालेखाकार (प्रशासन))
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले व ह)
मेघालय, शिलांग-793001

विषय:- हिन्दी ई-पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 18 वे संस्करण की प्रतिक्रिया का प्रेषण

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18 वे संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं उच्च कोटि की हैं। श्री राजू नागल की रचना "मैं हिन्दी हूँ", श्री विजय कुमार की रचना "आत्मविश्वास", श्री अशोक कुमार की रचना "पर उपदेश कुशल बहुतेरे", श्री पार्थ ज्योति दे की रचना "कोंगथोंग गाँव- मेघालय का एक अनूठा गाँव" विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,

02/11/2023
वरिष्ठ लेखा अधिकारी(राजभाषा)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक Date 15/11/23/246

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

क्र.हि.क.|पावती|2023-24|प.- 187

दिनांक
Date : 03.11.2023

प्रति,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
मेघालय,शिलांग-793001

विषय:- वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "नविन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की पावती का प्रेषण।
संदर्भ :- पत्र सं.हिंदी प्रकोष्ठ/30/हिंदी पत्रिका/2021/294 दिनांक 19.10.2023

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका **"नविन पूर्वांचल संदेश"** के 18वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट - मांढर, जीरो प्वाईंट, रायपुर - 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 2582082 - फैक्स/Fax : 2582505 - ई-मेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

---

हा.क./पत्रावली/2021-22

/434/2023

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit-II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ दिनांक: /2023

09 NOV 2023

सेवा में,
उप महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
मेघालय, शिलांग - 793 001

To,
Deputy Accountant General (Administration),
Office of the Principal Accountant General (A & E),
Meghalaya, Shillong – 793 001

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक Date 14/11/23/245

विषय: वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18 वें अंक के प्रेषण संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका, **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** के 18वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। सचित्र पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं, विशेषतः *'सामाजिक असमानता', 'पति-पत्नी का रिश्ता', 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे', 'कोंगथोंग गाँव: मेघालय का एक अनूठा गाँव', 'पश्चाताप', 'कुछ फिर बोलो', 'जुनबिल मेला- पारंपरिक विनिमय प्रथा', और 'मजदूर की मजबूरी',* आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक,कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले एवं हक)
तमिलनाडु, चेन्नई-18
टेलीफोन: 044-24324530 फैक्स: 044-24320562
Website : www.agae.tn.nic.in

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, CHENNAI-18
Phone: 044-24324530 Fax. 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका विनि/ 29463 दिनांक :30.10.2023

सेवा में,	To,
हिन्दी अधिकारी	The Hindi Officer
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),	Office of the Principal Accountant General (A& E),
मेघालय, शिलांग- 793001	Meghalaya, Shillong-793001

विषय: आपकी हिंदी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल" के 18वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "नवीन पूर्वांचल" का 18 वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका ने अपेक्षित सामग्री उपलब्ध की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित **श्री हेमलाल परियार द्वारा लिखित "स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गयी कर्मयोग की 10 शिक्षाएं", श्री अमन परियार द्वारा लिखित "कवि द्वारा पाठकों को अनुवादन", श्री नीरज कुमार गुप्ता द्वारा लिखित "अब बनाम [illegible]", श्रीमती सबीता देवी द्वारा लिखित "कथा [illegible]", श्रीमती बीना कुमारी राय द्वारा लिखित "पिता-प्रेम", श्रीमती मेघा रानी द्वारा लिखित "कोरोना के उपरांत प्रकृति का संदेश", श्रीमती रेनू नागर द्वारा लिखित "मजदूर की मजबूरी" श्री अशोक कुमार द्वारा लिखित "सफल अनुवादक के लक्षण", सुश्री प्रिया साव द्वारा लिखित "लकीरें", श्री राजन पाल देवकोटा द्वारा लिखित "मन" और सुश्री पिंटम्पा फुकन द्वारा लिखित "जुनबिल मेला : पारंपरिक विनिमय प्रथा" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।** राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक पक्ष है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

डॉ. सुभाषचंद यादव (हिंदी अधिकारी)

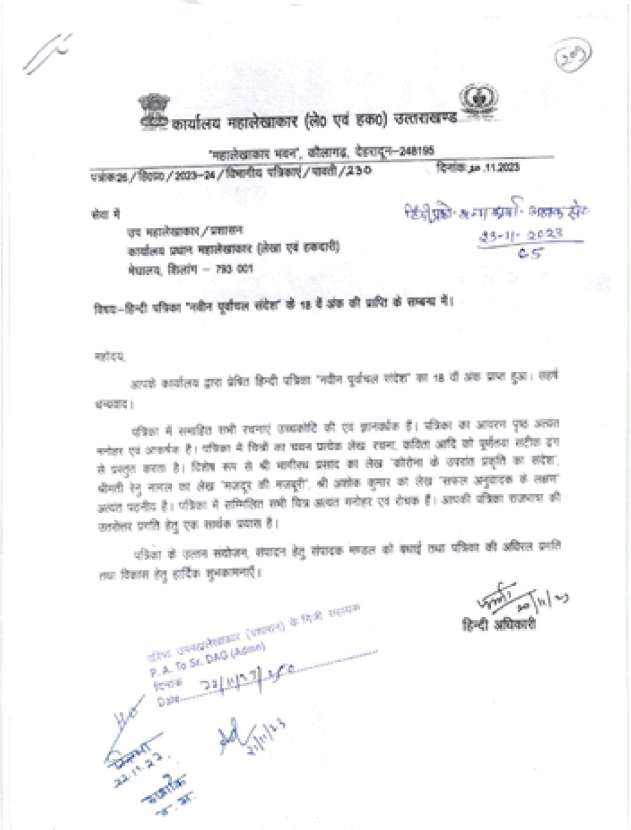

कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं हक०) उत्तराखण्ड
"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून–248195

पत्रांक26 / हिं०प्र० / 2023–24 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 230 दिनांक 20.11.2023

सेवा में
उप महालेखाकार / प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग – 793 001

विषय–हिन्दी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का 18 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत मनोहर एवं आकर्षक है। पत्रिका में चित्रों का चयन प्रत्येक लेख, रचना, कविता आदि को पूर्णतया सटीक ढंग से प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से श्री भागीरथ प्रसाद का लेख 'कोरोना के उपरांत प्रकृति का संदेश', श्रीमती रेनु नागर का लेख 'मजदूर की मजबूरी', श्री अशोक कुमार का लेख 'सफल अनुवादक के लक्षण' अत्यंत पठनीय है। पत्रिका में सम्मिलित सभी चित्र अत्यंत मनोहर एवं रोचक हैं। आपकी पत्रिका राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P.A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date

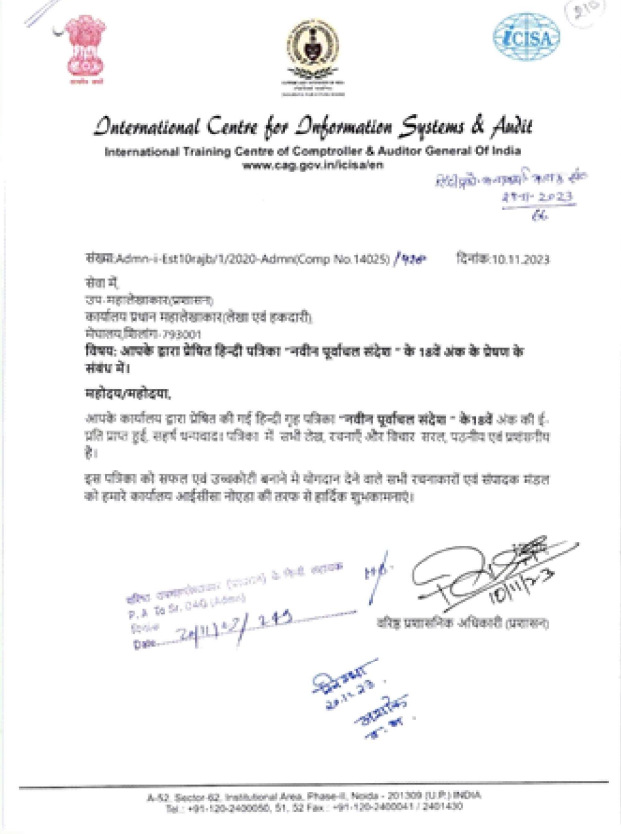

International Centre for Information Systems & Audit
International Training Centre of Comptroller & Auditor General Of India
www.cag.gov.in/icisa/en

संख्या:Admn-i-Est10rajb/1/2020-Admn(Comp No.14025) / 920 दिनांक:10.11.2023

सेवा में,
उप-महालेखाकार(प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी)
मेघालय,शिलांग-793001

विषय: आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश " के 18वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिन्दी गृह पत्रिका "**नवीन पूर्वांचल संदेश " के18वें** अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, रचनाएँ और विचार सरल, पठनीय एवं प्रशंसनीय है।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटी बनाने मे योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हमारे कार्यालय आईसीसा नोएडा की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P.A. To Sr. DAG (Admn)
दिनांक
Date

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (प्रशासन)

A-52, Sector-62, Institutional Area, Phase-II, Noida - 201309 (U.P.) INDIA
Tel.: +91-120-2400050, 51, 52 Fax.: +91-120-2400041 / 2401430

रा.भा.अ./एच-11005/02/पी-2/2021-22

1/441/24/2023

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: रा.भा.अ./एच-11005/02/2023-24/ दिनांक-21-11-2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक),
मेघालय, शिलांग-793001

विषय :- हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक के सम्बन्ध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित **हिंदी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक** की प्राप्ति हुई, पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुन्दर प्रस्तुतिकरण अत्यन्त प्रशंसनीय है। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका का **आवरण पृष्ठ** आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट **मैं हिंदी हूँ (श्री राजू लामा)**, और **मृत्यु (श्री नीरज कुमार गुप्ता)** जैसी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में अधिक शोध और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की महत्ता समाहित है। पत्रिका में समाहित चित्रकारी बहुत ही मनमोहक और शिक्षाप्रद है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

भवदीय,

RAJESH
RAISINGHANI
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

Signed by Rajesh Raisinghani
Date: 21-11-2023 16:50:2
Reason: Approved

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017

Office of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T., Sector-17E, CHANDIGARH - 160017

फैक्स - 0172-2703110, दू. सं. - 2702272, 2702072

- हिंदी कक्ष/समीक्षा/10/2023-24/580 दिनांक-10.11.2023

सेवा में,

हिंदी प्रभारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(ले. एवं हक.),
मेघालय, शिलांग-793001

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 18वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 18वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री अशोक कुमार की 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे', श्री नीरज कुमार गुप्ता की 'मृत्यु', श्री अमन परिहार की 'कवि द्वारा पाठकों को अनुवादन' श्री विजय कुमार की 'आत्मविश्वास', श्रीमती सबीता देवी की 'क्या करें', श्रीमती रेनु नागल की 'मजदूर की मजबूरी', श्री सिद्धार्थ कुमार 'मोहब्बत-ए-नौकरी' रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./क्षा-7/ जावक - 53 दिनांक 01 .12.2023

प्रति,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी /हिन्दी अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
मेघालय, शिलांग-793001

विषय : वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की पावती बाबत।
संदर्भ : आप के पत्र संख्या हिन्दी प्रकोष्ठ /30/हिन्दी पत्रिका/2021/294 दिनांक 19.10.2023

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर मृत्यु, खुद की खुद से समझ, आत्मविश्वास, महिलाओं की स्थिति, समय की प्रक्रिया, पति-पत्नी का रिश्ता, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय है।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

ह.क्रि./से.प./प्रतिक्रिया/37/2022-23/62

दिनांक- 04.12.23

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार

सेवा में,

उपमहालेखाकार/प्रशासन
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय,
शिलांग - 793001

विषयः हिन्दी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक का प्रतिभाव।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक (ई-प्रति) की प्राप्ति हुई, एतदर्थ आभार एवं धन्यवाद।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक पृष्ठों के छायाचित्र सुंदर, प्रशंसनीय तथा मनमोहक है। पत्रिका की समस्त रचनाएँ ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं पठनीय है। रचनाकारों को साधुवाद।

श्री नीरज कुमार गुप्ता का लेख "मृत्यु", श्री राजू नागल का लेख "मैं हिन्दी हूँ", श्री अनीष कुमार का कविता "खुद की खुद से समझ", श्री विजय कुमार की कविता "आत्म विश्वास", श्री विशाल श्रेष्ठी की कविता "मातृ भाषा" श्रीमती सेवा रानी की कविता "कोरोना के उपरांत प्रकृति का संदेश" श्री अशोक कुमार का लेख "पर उपदेश कुशल बहुतेरे" श्रीमती आकांक्षा पटेल की कविता "बेटियाँ" श्री स्वास्तिक बी. रसाईली की कविता "आओ प्रकृति से सीखो" श्री राजू नागल का लेख "महिलाओं की स्थिति", श्री अशोक कुमार का लेख "सफल अनुवादक के लक्षण" तथा श्री आनंद कौशल का लेख "पश्चाताप" विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

हिन्दी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" इसी प्रकार निरंतर प्रगति करते हुए राजभाषा हिन्दी की प्रगति में अपना योगदान देता रहे, इसी शुभकामना के साथ समस्त रचनाकारों एवं संपादकीय मण्डल को पुनः बधाई एवं आभार।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

Signed by Manoj Kumar
Date: 06-11-2023 14:42:19
Reason: Approved

राभाअ/पत्राचार
1323242/2023/RAJBHASHA (PDA (ECoR)-BHUBANESWAR)

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2023-24 दिनांक-06.12.2023

सेवा में,
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),मेघालय,
एम.जी. रोड , गवर्नर हाउस के सामने,
शिलांग -793001
ईमेल- agaemeghalaya@cag.gov.in

विषय- हिंदी पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** के **18** वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** का **18** वाँ अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	सुश्री डेसी हालनेऊ वाईफेई	सामाजिक अलगाव
2.	श्री राज्य पाल देवकोटा	अंतरद्वन्द
3.	श्री सुरेन्द्र कुमार	मोहब्बत-ए-नौकरी
4.	श्री स्वास्तिक बी. रसाईली	आओ प्रकृति से सीखो
5.	सुश्री स्निग्धा फुकन	जुन बिल मेला

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,

Signed by Kirti Shree
Date: 12-12-2023 12:00:23
Reason: Approved

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

दूरभाष सं.-0674-2303511 ई-मेल- pdarlyecoastr@cag.gov.in / rajbhasha.ecorly@cag.gov.in

दूरभाष/Telephone- 2223210, 2223766, 2224812

फैक्स/Fax- 0612-2226977

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, बिहार, पटना

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), BIHAR, PATNA

पत्रांक-हि.अ./ले. व हक./पत्रिका प्रतिक्रिया/22-23/ 76

दिनांक 07.12.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.),
मेघालय, शिलांग- 793001

विषय: हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित उक्त वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का ई-संस्करण की प्रति ईमेल के माध्यम से प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते हैं। राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान स्वरूप पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का ई-संस्करण डिजीटल रूप में आज सहजता से सभी पाठकों के हाथों में पहुँच चुका है जो स्वयं में एक विकास प्रतीति है। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ सहज ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय है बल्कि सामाजिक पहलुओं से जुड़े कई संदेश भी देती है। आशा ही नहीं अपितु मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र है। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी (हिंदी अनुभाग)

Scanned with OKEN Scanne

हि.क./स.प./वाह्यपत्राचार/2023-24

I/463525/2023

भारत सरकार
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला – 171 003

सत्यमेव जयते

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla 171 003

संख्या:हि.क./बाह्य पत्रिका/2023-24/I/463525/2023दिनांक:-11-12-2023

सेवा में,

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

मेघालय, शिलांग- 793001

विषय:- वार्षिक हिंदी पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 18वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका '**नवीन पूर्वांचल संदेश**' के 18वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में शामिल लेख, 'स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गयी कर्मयोग की 10 शिक्षाएं, मैं हिन्दी हूँ, समय की पहिया, सफल अनुवादक के लक्षण, कौंगथोंग गाँव: मेघालय का एक अनूठा गाँव' तथा इस के अतिरिक्त कविताएं, 'मृत्यु, मन, लकीरें, मातृभाषा, कोरोना के उपरांत प्रकृति का संदेश' आदि विशेषकर उल्लेखनीय एवं पठनीय लगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं इस की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीया,

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) के निजी सहायक
P. A. To Sr. DAG (Admn)

Signed by Anuradha Sood
Reason: Approved

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)

Anuradha Sood, SAO(HINDI)-
AS, HINDI

Firefox https://email.gov.in/#1

From: "MOUSUMI CHOUDHARY" <mousumic.asm.au@cag.gov.in>
To: "AGAE MEGHALAYA" <agaemeghalaya@cag.gov.in>
Cc: "Deepak Joshi" <deepakj.mh3.au@cag.gov.in>
Sent: Monday, April 8, 2024 2:40:46 PM
Subject: कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें संस्करण की प्राप्ति के संबंध में

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, असम
शिलांग

विषय: कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें संस्करण की प्राप्ति के संबंध मे।

महोदय/महोदया,

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, मेघालय, शिलांग द्वारा प्रकाशित हिन्दी ई-पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के 18वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

"नवीन पूर्वांचल संदेश" पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

भवदीया,
मौसमी चौधरी,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम

1 of 2 4/8/2024, 4:24 PM

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2023
में स्वागत भाषण देते हुए
डॉ. डी. अनिश, वरिष्ठ उप
महालेखाकार महोदय

अपने अनमोल उद्‌बोधन से श्रोताओं को
अभिभूत करती हुई मुख्य अतिथि महोदया

स्वरचित कविता का सस्वर पाठ करते हुए
श्री बाबुल सोम, सहायक लेखा अधिकारी

समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि सहित कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारीवृंद

गृह पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 18वें अंक का विमोचन डिजिटल स्क्रीन पर

समारोह की शोभा बढ़ाती हुई बालिका द्वारा सांस्कृतिक नृत्य की प्रस्तुति

2022-23 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले अनुभाग के शाखा अधिकारी को मुख्य अतिथि महोदया शील्ड से सम्मानित करती हुई

समारोह के शुभ अवसर पर मंच संचालन करते हुए श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ अनुवादक

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय

मुख्य अतिथि महोदया, विभागाध्यक्ष, समूह अधिकारी एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023 से जुड़े अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीवृंद

"श्रीमंत शंकरदेव"
(उनका जीवन और सामाजिक सुधार के लिए कार्य)

श्री रातुल चंद्र बरा
उप महालेखाकार (प्रशासन)

असम में भक्ति आंदोलन के संस्थापक प्रमुख श्रीमंत शंकरदेव थे, जो **1449** ई. में नगाँव जिले के बरदोवा (आलिपुखुरी) में पैदा हुए थे। उनके पिता कुसुम्बर भूञां और माता सत्यसंध्या थीं जोकि कायस्थ हिंदू जाति के थे। अपने जन्म के तीन दिन बाद उन्होंने अपनी माँ को खो दिया और उनकी दादी ने उनका पालन-पोषण किया। दादी का नाम खेरसुती था, ऐसा कहा जाता है कि उनका नाम शंकर रखा गया था। उनका जन्म भगवान शंकर के वरदान के रूप में कुसुम्बर से हुआ था जिन्होंने उनकी पूजा की थी। ऐसे वरदान के लिए श्रीमंत शंकरदेव के पूर्वजों ने छोटे राज्य की स्थापना की जोकि भूञां राज्य के नाम से जाना जाता है। बारह वर्ष की आयु में शंकर को गाँव भेज दिया गया। गुरूकुल का संचालन महेंद्र कंदली नामक ब्राह्मण विद्वान द्वारा किया जाता था। उसके दौरान छह-सात वर्ष की अल्प अवधि में ही उन्होंने गुरूकुल शिक्षा पूर्ण कर ली थी । इस गुरूकुल में वेदों में उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत और अन्य काव्य, व्याकरण और दर्शन आदि में शिक्षा प्रदान की जाती थी । तब अपने प्रारंभिक शिक्षा के दौरान शंकर देव ने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया। अक्षर ज्ञान सीखने के बाद ही उन्होंने अपनी स्व-रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया जो कि बिना स्वर (मात्रा को छोड़कर) के उपयोग के, मात्र व्यंजन वर्णों की सहायता से एक कविता की रचना की । कविता इस प्रकार है-

कर तल कमल कमल दल नयन।
भवदव दहन गहन वन शयन।।
नपर नपर पर सतरत गमय।
सभय मभय भय ममहर सततय।।
खरतर बरशर हत दशवदन।
खगचर नगधर फणधर शयन।।
जगदघ मपहर भवभय तरण।
परपद लय कर कमलज नयन।।

- "हथेली कमल के समान है, आपकी आंखें कमल के पंखुड़ियों के समान हैं। आप योग्य कष्टहर्ता हैं। आप गहरे जंगल में सोने वाले, सर्वव्यापक तथा अन्तर्यामी हैं। आप सदैव मेरे भय को दूर करते हैं और मेरी सुरक्षा करते हैं। आप दस सिर वाले राक्षस का नाश करने वाले हैं। पर्वत का उत्थान करने वाले आप ही है। आप नाग (अनंत) के फन पर शयन

करने वाले देव हैं। आप सांसारिक पापों का नाश करने वाले हैं। आपकी कला सांसारिक दुःखों से मुक्त के लिए है। आप ही दाता हैं। अंतिम धन्यवाद - हे कमल नयन प्रभु! (मैं आपसे प्रार्थना करता हूं)।"

ऐसा कहा जाता है कि, जब गुरु महेंद्र कंदली ने देखा कि उनके शिष्यों के व्यक्तित्व में असाधारण गुण हैं, तो उनकी इच्छा पर शंकर को श्रीमंत शंकरदेव बुलाया जाने लगा।

अपनी शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त श्रीमंत शंकरदेव एक नेतृत्व करना चाहते थे, बुद्धिजीवी जीवन स्वयं को भूञां की शिरोमणि से दूर रखते हैं, लेकिन अपने रिश्तेदारों और संबंधियों के अनुनय पर उन्होंने भूञां की शिरोमणि की जिम्मेदारी संभाली और उन्होंने बरभूञां और बरडेका के नाम से ख्याति प्राप्ति की। अपनी दादी की मनोकामना पूर्ति हेतु उन्होंने **23** वर्ष की उम्र में कायस्थ कन्या सूर्यवती से विवाह किया और वर्षों तक उन्होंने गृहस्वामी और उपदेशक दोनों के रूप में कार्य किया। जब वह **34** वर्ष के थे तब उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। इसके बाद उन्होंने खुद को लगभग पूरी तरह से अभ्यास के लिए समर्पित कर दिया और भक्ति पंथ की शिक्षा ली। उन्होंने लंबे समय तक चलने वाली तीर्थयात्रा की। बारह वर्ष (उनकी **34** से **46** वर्ष तक) गया, पुरी, वृंदावन, मथुरा, काशी, द्वारिका, सहबंध, प्रयाग, कुरूक्षेत्र, अयोध्या, बदरिकाश्रम तथा अन्य स्थानों का भ्रमण किया।

अपनी तीर्थयात्राएँ पूरी करके श्रीमंत शंकरदेव व्यापक योजनाओं के साथ असम वापस आ गए। उन्होंने भक्ति आंदोलन के लिए स्थायी नींव तैयार की और लोगों के बीच सक्रिय रूप से भागवत- एक के प्रति सर्वोच्च समर्पण का धर्म (एक- शरण-धर्म) के संदेश का प्रचार करने का निर्णय लिया और वह 'विष्णु - कृष्ण, सर्वोच्च भगवान हैं', का प्रचार किया। श्रीमंत शंकरदेव ने उपदेश दिया कि भागवत पुराण में चित्रित श्री कृष्ण सबसे महान हैं, सभी देवताओं में ब्रह्मा महेश्वर सहित अन्य सभी देवता उनके अधीन हैं।

उनके समय से पहले, असम में धार्मिक जीवन से प्रतीत होता है कि यह काफी कमजोर था। ब्राह्मण लोग और आम जनता अधिकांशतः शाक्त थे और उनका धर्म अधिकांश एक ऐसी देवी माँ को प्रसन्न करने का प्रयास था, जिसके लिए वे पशुओं की बलि और कभी-कभी उसे मानवों की बलि भी देते थे। इन कल्पना और अभ्यासों में आध्यात्मिकता का बहुत ही कम हिस्सा था और ये सब शाक्त तंत्र पर आधारित था।

श्रीमंत शंकरदेव एक संत प्रवाचक थे, जिनका मुख्य उद्देश्य उत्तर पूर्वी क्षेत्र में नव-वैष्णव आंदोलन के संदेशों को फैलाना था, जिसमें उदारवाद और मानवतावाद प्रमुख था। श्रीमंत शंकरदेव की अद्वितीय प्रतिभा ने अपने आप को धार्मिकता और आध्यात्मिकता की सीमाओं के भीतर ही नहीं रखा बल्कि इनकी प्रतिभा ने साहित्य, कला, संस्कृति के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रवाहित किया। उनकी प्रतिभा का एक और प्रयास समाज को लोकतांत्रिक और मानवतावादी दिशाओं में

सुधारने और पुर्ननिर्माण करने का था। उनका आदर्शवाद असाधारण स्तर की वैज्ञानिक निष्पक्षता और सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति परिपक्व जागरूकता से ओत-प्रोत था।

श्रीमंत शंकरदेव द्वारा किए गए सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक सुधारों में से एक यह है कि उन्होंने नव-वैष्णव विश्वास के माध्यम से जाति, धर्म की स्थिति के बावजूद मानव की सामाजिक पहचान की। वह विशेष ध्यान देते थे प्रमुखतः उन जातियों को जो इस क्षेत्र की आबादी का बड़ा हिस्सा बनाती थी, जिन्हें अधिकांशतः पारंपरिक हिन्दू धर्म द्वारा पंक्ति में रखा जाता था। उन्होंने साहसपूर्वक घोषणा की कि प्रभु के प्रति भक्ति के मामले में सभी समान हैं तथा इसमें कोई जाति और जाति भेद नहीं हो सकता है।

छुआछूत की सामाजिक बुराई जिसके खिलाफ महात्मा गांधी को बीसवीं सदी के भारत में युद्ध करना पड़ा, श्रीमंत शंकरदेव ने असम में पचासवीं शताब्दी में यह कार्य किया। श्रीमंत शंकरदेव ने अपने धार्मिक भावना को इस तरह से संचालित किया कि उसमें आदमी और आदमी के बीच कोई भेद न रहे। जब वे अपने 'एक-शरण धर्म' में शामिल होते थे, तो आर्यों के हिंदू धर्म के अतिरिक्त मूल रूप से बड़ी संख्या में मंगोलीय जनजातियाँ पहाड़ियों और मैदानी इलाकों में निवास कर रही थीं। श्रीमंत शंकरदेव ने सभी को गले लगाया और इन सभी लोगों को अपने धर्म में सम्मिलित किया। मुस्लिम धर्म को भी उनके धर्म में स्वागत किया जाता था। आखिरकार, उन्होंने पुनर्जागरूकता आंदोलन शुरू किया, जिसमें वे उन जनजातियों को आमंत्रित करते थे जो प्राचीन जीवन पद्धति से जीवन निर्वाह करते थे परन्तु उनके पास इस प्रकार का कोई संगठित धर्म नहीं था। यहां तीव्र जातिगत भावनाओं का अभाव भी उनके उदार दृष्टिकोण के कारण माना जाता है।

श्रीमंत शंकरदेव ने समाज में एक नयी लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था स्थापित की, जिसमें नामघर (गाँव की प्रार्थना सभा) को नीचे और सत्र (मध्यालय) को ऊपर रखा गया। उनके प्रचार और संदेश इस लोकतांत्रिक व्यवस्था के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाया गया। श्रीमंत शंकरदेव ने असम के सामाजिक-धार्मिक विकास में अत्यधिक योगदान दिया। नामघर गाँव न केवल श्रीमंत शंकरदेव का प्रवचन करने का भी स्थल था, बल्कि साधारण लोगों के सामाजिक न्याय, कला और संस्कृति के अनुरक्षण का स्थल भी था। नामघर ने गाँव-गाँव में बौद्धिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रसार की दिशा में बड़े पैमाने पर काम किया और समय के साथ गाँव के लोगों के सामाजिक, आर्थिक जीवन के सभी पहलुओं का तंत्रिका-केंद्र समन्वय करने लगा। किसी भी राजनीतिक बदलाव का इस लोकतांत्रिक धार्मिक-सांस्कृतिक ढांचे से कोई लेना-देना नहीं है, जिसका प्रभाव गाँव समुदाय पर गहरा पड़ता हो।

श्रीमंत शंकरदेव राजनीति में धर्मनिरपेक्षता के प्रमुख अग्रणी थे। उन्हें इस समय के कोच बिहार के महाराज नरनारायण से संरक्षण मिला हालांकि उन्होंने राजा को अपना शिष्य मानने से इनकार किया। यदि वे तत्समय की राजनीति पर प्रभुत्व करने का आग्रह करते, तो वे बड़ी आसानी से कर सकते थे और राजा नरनारायण उनके नवधर्मप्रचारक के रूप में काम करते, जैसे कि बौद्ध धर्म के मामले में अशोक या हर्षवर्धन ने किया था। राजा को अपना शिष्य नहीं मानकर श्रीमंत शंकरदेव ने उनकी आध्यात्मिक शुद्धता को बचाया और सामान्य लोगों को जन-धन के दुरुपयोग से बचाया, जो जनमानस की दुःखभरी स्थितियों में ले जाता था। इसका भी सबसे बड़ा लाभ यह था कि हर प्रकार के राजनीतिक आंदोलनों के बावजूद उनके लोकतांत्रिक धर्म ने असम राज्य पर प्रभाव डाला। उनका प्रभाव सभी राजनीतिक तूफानों के बावजूद पूरा और अद्वितीय रूप से बरकरार रहा। यह दिलचस्प है कि असम के वैष्णव संत ने जिसे कई वर्ष पहले स्थापित किया था वह महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए धार्मिकता के पथ के रूप में प्रतीत हुआ। आखिरकार, श्रीमंत शंकरदेव ने असम राज्य में सांस्कृतिक क्रांति आरंभ की। उन्होंने केवल धर्म के द्वार ही नहीं, बल्कि भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के द्वार भी सभी के लिए खोल दिए और उन्होंने असम में धर्म और जीवन की दिशा में असमीया साहित्य और संस्कृति पर अपनी छाप छोड़ी। वे एक साथ कवि, संत, धार्मिक शिक्षक और सामाजिक सुधारक रहे।

एक छोटी सी अधूरी कहानी

श्री राज्यपाल देवकोटा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

"तुम मेरी बात नहीं सुनते ऐसा लगता है कि मैं मूर्ख हूँ, जो तुम्हें सुधारने पर तुला हुआ हूँ, ताकि तुम जीवन में कुछ अच्छा कर सको।"

"कोई जरूरत नहीं पापा, आप मेरे जीवन में अच्छा प्रदर्शन करने को लेकर इतने चिंतित क्यों हैं, अगर मुझे अच्छा करना है तो मैं अपनी योग्यता के आधार पर ऐसा करूँगी, इसलिए नहीं कि आप पूरे दिन मुझे टोकते रहे।"

"मैं तुम्हें तंग कर रहा हूँ देखो माया, तुम्हारी बेटी मुझ पर उसे परेशान करने का आरोप लगा रही है, जबकि मैं तो बस पढ़ाई और जिंदगी के प्रति गंभीर रहना चाहता हूँ।"

"कृपया, आप दोनों पिता-बेटी, मुझे हर दिन अपनी कभी न खत्म होने वाली बकवास में न घसीटें। (चिढ़कर बड़बडाते हुए) आपकी बेटी, कुछ अच्छा करती है तो मेरी बेटी है, नहीं तो आपकी बेटी।"

जोशी परिवार की यही दिनचर्या है।

मोहन जोशी, शासकीय अधिकारी अपनी बड़ी बेटी को पढ़ाई में ध्यान न लगा पाने को लेकर हमेशा आशंकित रहते थे।

समीक्षा बचपन से ही स्वतंत्र स्वभाव की थी। बेशक, वह अपने माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी थी, तथापि, वह खुद को एक निश्चित सीमा तक ही सीमित रखती थी, इससे अधिक नहीं, चाहे उसके माता-पिता, शिक्षक आदि उससे कुछ भी अपेक्षा करें।

वह पढ़ाई में औसत थी और यही एक मुख्य कारण था कि उसके पिता मोहन असहज महसूस करते थे। वह हमेशा उसे हर काम में सर्वश्रेष्ठ होने के लिए प्रोत्साहित करते थे, चाहे वह पढ़ाई हो या सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ।

लेकिन समीक्षा का अपना मन था।

वह अपने पिता की इच्छानुसार कुछ समय के लिए संगीत की कक्षा में गई और एक या दो साल बाद, अपने पिता से स्पष्ट रूप से कह दिया कि वह इसे आगे नहीं बढ़ाएगी।

जब वह के.जी. में थी तब से नृत्य और कला की कक्षा में जाती थी, लेकिन अपने माता-पिता की बहुत मिन्नतों के बावजूद वह परिवार के सामने अपने कौशल का प्रदर्शन नहीं करती थी।

अपनी माँ को खुश करने के लिए, उसने उत्सव के समय नृत्य और कला प्रतियोगिता में भाग लिया और आंठवी कक्षा में पहुँचने के बाद, ये घोषणा की कि वह अब बच्ची नहीं है, इसलिए अब ऐसी प्रतियोगिता में भाग नहीं लेगी।

हालाँकि वह कुछ मामलों में जिद्दी थी, फिर भी वह एक आज्ञाकारी और सौम्य स्वभाव की लड़की थी। उसकी

साधारण ग्रेडिंग को छोड़कर उसके शिक्षकों की ओर से कोई नकारात्मक टिप्पणी कभी नहीं आई। सबके साथ अच्छा व्यवहार, उसके सभी चचेरे भाई-बहन और परिवार के सदस्य उससे प्यार करते थे। उन्हें उम्मीद थी कि वह 12वीं तक की पढ़ाई जो कुछ कर रही थी, भविष्य में उससे कुछ बेहतर करेगी।

उन्होंने 12वीं से पहले ही घोषणा कर दी थी कि वह अपनी उच्च शिक्षा अपने मौजूदा शहर से नहीं बल्कि किसी बड़े शहर से करेगी। 12वीं का रिजल्ट आ गया था। चूंकि उसने आगे बढ़ने के लिए कला को चुना था, इसलिए उसके पिता उसके भविष्य की संभावनाओं को लेकर आशंकित थे। हालाँकि, वह उसे हतोत्साहित नहीं करना चाहते थे, इसलिए कला में व्यापक अवसरों के बारे में समझाकर उसे प्रोत्साहित करते रहते थे।

इस लघु कहानी का सार यह है कि एक समय आएगा, जब हम बच्चों को अपना शिक्षा संबंधी निर्णय स्वयं लेने दें, हालाँकि आवश्यकता पड़ने पर हमें उन्हें सलाह देने के लिए हमेशा साथ रहना होगा। यह उन्हें निर्णय लेने के लिए प्रेरित करेगा जो आने वाले वर्षों में बहुत मददगार होगा।

सफलता और असफलता एक सिक्के के दो पहलू हैं। इनमें से कौन सा पक्ष आपका होगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने इसे पाने के लिए कितना प्रयास किया है।

शिलांग शहर का पर्यटन

सुश्री स्नेहा घटक
सुपुत्री - श्री सुमित घटक
सहायक पर्यवेषक

देश के प्रत्येक भाग में पर्यटन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन किसी भी विशेष स्थान की सुंदरता को बढ़ाता है। यह विशिष्टता का बोध कराता है। पर्यटन लोगों को भारत के विभिन्न भागों में भ्रमण हेतु आकर्षित करता है। इसलिए, शिलांग भारत के पूर्वोत्तर में प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। यह शहर बहुत ही खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों, झरनों, वास्तुशिल्प स्मारकों और कई खूबसूरत गांवों से परिपूर्ण है। शिलांग के कुछ प्रसिद्ध पर्यटन स्थल जो लोगों को आकर्षित करते हैं वे हैं:-

एलिफैंट फॉल्सः यह मेघालय के मुख्य शहर शिलांग से 12 कि.मी. की दूरी पर स्थित अपर शिलांग में स्थित है।

स्वीट फॉल्सः इसे स्थानीय बोली में 'क्षैयद वेइल्डेन' भी कहा जाता है। यह शिलांग के पास हैप्पी वैली से लगभग 5 कि.मी. दूर है और भूतल से लगभग 96 मीटर ऊँचाई पर स्थित है।

उमियम लेकः 'उमियम लेक' जिसे 'बड़ा पानी' के नाम से भी जाना जाता है, शिलांग से गुवाहाटी की ओर **15** कि.मी. की दूरी पर उत्तर दिशा की ओर, पहाड़ियों में स्थित एक जलाशय के रूप में है।

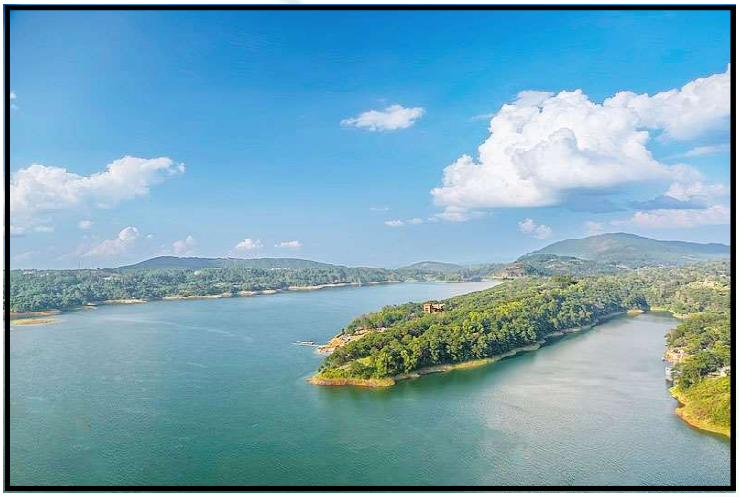

शिलांग मेघालय राज्य के अंतर्गत आता है, यह मेघालय की राजधानी भी है। हरियाली की सुंदरता इस शहर को अन्य शहरों से भिन्न बनाती है।

शिलांग शहर की कुछ प्राकृतिक सुंदरताओं में निम्न आकर्षण शामिल हैं:-

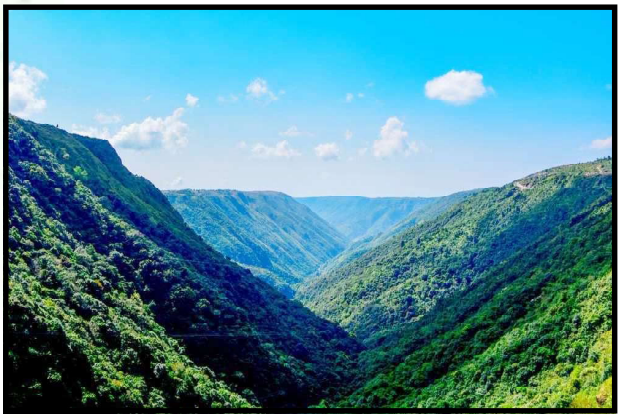

डैंग्इन्य पीक

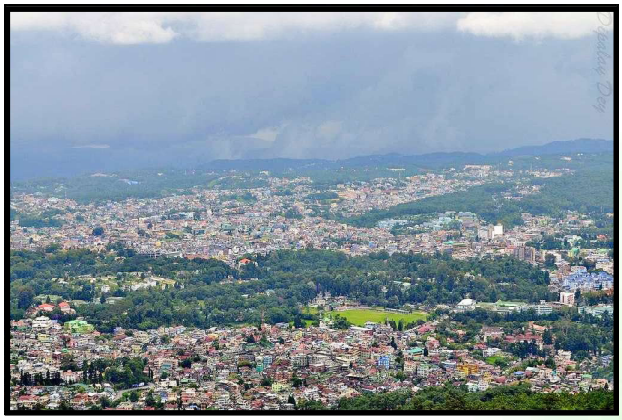

शिलांग पीक

लैटलुम कैनियन्स

स्प्रेड ईगल फहल्स

उम्मोट रिवर - डावकी रिवर

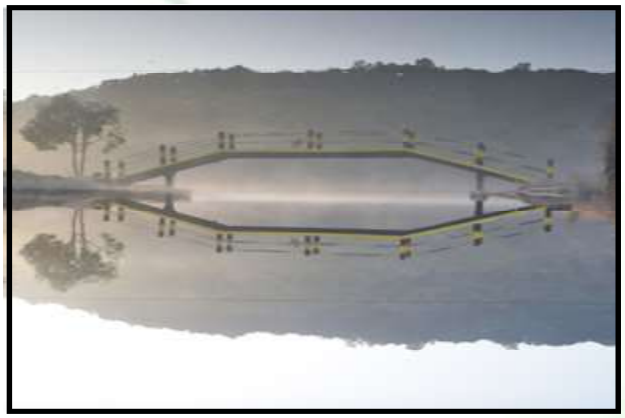

मौसिनराम

शिलांग में ये पर्यटन के लिए आवश्यक भ्रमण योग्य स्थान हैं । शिलांग अपने हरे-भरे खेतों, धुंध भरे पहाड़ों, भव्य दृश्यों, सुगंधित सुमनों और मैत्रीपूर्ण स्वभाव और प्रभाव की प्रतिच्छाया के लिए प्रसिद्ध है। यह शिलांग शहर, राज्य के पूर्व मध्य भाग के पठार पर **4990** फीट (**1520** मीटर) की ऊंचाई पर स्थित है। शिलांग पहली बार, **1864** में, महत्वपूर्ण तथा लोगों के ज्ञान प्रकाश में आया जब मेघालय की राजधानी चेरापूंजी से शिलांग स्थानान्तरित की गयी। इस शहर की तरों - ताजगी कुछ भिन्न है। मौसम हमेशा सुखद और शांत रहता है। इसलिए शिलांग भ्रमण का सर्वोत्तम समय मार्च से जून माह तक होता है, क्योंकि इस समय मौसम सुहावना और सुखद रहता है। चारों ओर का वातावरण हरा-भरा होता है, हवा तरो - ताजगी से परिपूर्ण होती है तथा आसमान साफ रहता है। यह ट्रैकिंग, माउंटेन बाइकिंग और वहटर रैपलिंग जैसी साहसिक गतिविधियों के लिए भी उपयुक्त समय माना जाता है। शिलांग का मौसम बहुत ही सुहावना होता है, जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता रहता है। ग्रीष्म ऋतु के दौरान दिन का तापमान थोड़ा गर्म होता है परंतु अधिकतम **30** डिग्री सेंटीग्रेड से न्यून रहता है। अतः हम अपने घर की खिड़कियां खुली रखते हैं, यहां तक कि ग्रीष्म के दिनों में भी पंखे की आवश्यकता नहीं होती है। रातें सदैव सुहावनी रहती हैं। शरद ऋतु में ठंड थोड़ी अधिक होती हैं, और तापमान लगभग **5** डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुँच जाता है। दिसंबर और जनवरी माह के दौरान गर्म कपड़े और रूम हीटर की आवश्यकता पड़ जाती हैं। पवन अर्थात हवा की गुणवत्ता उत्कृष्ट होती है। मेघों द्वारा इस शहर का स्वागत वर्ष भर होता रहता है। वर्ष में कई महीने वर्षा होती रहती है।

संक्षेप में, शिलांग की जलवायु मनोरम है। यदि किसी को प्रस्तरों में रुचि है और वह कड़ाके की शीत और आरामदायक गर्मियों का आनंद लेना चाहता है, तो यह शिलांग सर्वोत्तम स्थानों में से एक है।

हिंदी

श्रीमती मेघा रानी
पत्नी - श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

हिंदी हूँ मैं हिंदी हूँ,
थोड़ी सी जिद्दी हूँ,
ना छोटी हूँ ना पिद्दी हूँ,
बस थोड़ी सी जिद्दी हूँ।

तू इंग्लिश है,
और गर्म है।
मैं हिंदी हूँ,
पर नरम हूँ।

तेरे बोल कड़वे है,
मैं ऐसी बोल हूँ जो दिल को छूते हैं,
तेरे आने पर लोगों ने मुझे भुलाया है,
मेरे नाम पर हिंदी दिवस मनाया है।

पर वह क्या जाने,
तू तो पराई है,
और
हमने बस अपनाई है।

आज नहीं तो कल तुझे जाना है,
मैं यहीं की हूँ यहीं विलीन हो जाना है।
मैं तो इस देश का हिस्सा हूँ,
हर एक की जुबान का किस्सा हूँ।

हिंदी हूँ मैं हिंदी हूँ,
ना छोटी हूँ ना पिद्दी हूँ,
बस थोड़ी सी जिद्दी हूँ।

चार धाम यात्रा वृत्तान्त

श्री गणेश प्रसाद शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

वर्ष **2022** में मई के अंतिम सप्ताह में मैंने छुट्टी यात्रा रियायत का लाभ उठाया और अपने परिवार के साथ चार धाम के लिए रवाना हुआ। उत्तराखंड में पतंजलि, हरिद्वार की यात्रा करना हमारा बहुत अच्छा अनुभव था। पतंजलि योगपीठ में आनंद लेने के बाद हम चार धाम के लिए रवाना हुए।

उत्तराखंड, जिसे देवभूमि या देवताओं की भूमि के रूप में भी जाना जाता है, कई मंदिरों का घर है और वह पूरे वर्ष भक्तों का स्वागत करता है। उत्तराखंड में श्रद्धालु जिन अनगिनत धार्मिक स्थलों और सर्किटों का दौरा करते हैं, उनमें सबसे प्रमुख चार - धाम यात्रा है। यह हिमालय की ऊंचाई पर स्थित चार पवित्र स्थलों - यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ - की तीर्थयात्रा है। हिंदी में, 'चर' का अर्थ है चार और 'धाम' का अर्थ धार्मिक स्थल से है।

ऊंचाई पर स्थित मंदिर हर साल लगभग छह महीने के लिए बंद रहते हैं, गर्मियों में (अप्रैल या मई) खुलते हैं और सर्दियों की शुरुआत (अक्टूबर या नवंबर) के साथ बंद हो जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि चार धाम यात्रा को दक्षिणावर्त दिशा में पूरा करना चाहिए। इसलिए, तीर्थयात्रा यमुनोत्री से शुरू होती है, गंगोत्री की ओर बढ़ती है, केदारनाथ तक जाती है और अंत में बद्रीनाथ पर समाप्त होती है। यात्रा सड़क या हवाई मार्ग से पूरी की जा सकती है (हेलीकॉप्टर सेवाएं उपलब्ध हैं)। कुछ भक्त दो धाम यात्रा या दो तीर्थों - केदारनाथ और बद्रीनाथ की तीर्थयात्रा भी करते हैं। लेकिन हमें चार - धाम के सभी मंदिरों के दर्शन करने का अवसर मिला और वह भी पद यात्रा ।

उत्तरकाशी जिले में यमुना नदी (गंगा नदी के बाद दूसरी सबसे पवित्र भारतीय नदी) के स्रोत के करीब एक संकीर्ण घाटी में स्थित यमुनोत्री मंदिर, देवी यमुना को समर्पित है। उत्तरकाशी जिला देवी गंगा को समर्पित गंगोत्री का भी घर है, जो सभी भारतीय नदियों में सबसे पवित्र है। रुद्रप्रयाग जिले में स्थित केदारनाथ भगवान शिव को समर्पित है। बद्रीनाथ, पवित्र बद्रीनारायण मंदिर का घर, भगवान विष्णु को समर्पित है। चार धाम यात्रा जितनी दिव्य है उतनी ही कठिन भी लेकिन आत्मा को तृप्त करने वाली है।

सुकून

श्री राज्यपाल देवकोटा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

दानों की खोज में उड़ चला,
घोंसला को फिर न देखा मुड़कर।
अजनबी नगर में दिखे अनजान सारे,
न मिला कोई मुस्कुराता चेहरा ।।

तारों को गिनकर बिताई रातें,
नींद न जाने खो गये कहीं ।
आँखों में झलकें सुकून उस घोसलें की,
जिसे छोड़ दाना चुगने आया ।।

दानों की कमी है न यहाँ,
पर मन क्यों मुर्झाया रहे।
छप्पन भोग मिले यहाँ,
पर वहाँ की सूखी रोटी क्यों याद आयें।।

उड़ चलूँ वापस पुराने घोंसले की ओर,
पर फिर मन में एक डर जागे।।

करुणा का एक कार्य

श्री स्वास्तिक बी रसाईली
सुपुत्र - श्री राजेश कुमार रसाईली
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

मैं अपनी सुबह की सैर पर था जब मैंने आक्रामक कुत्तों के एक झुंड को एक छोटे से पिल्ले को धमकाते हुए देखा, जो अपनी माँ से भटक गया था और सीधे अमित्र क्षेत्र में चला गया था। मेरी सुरक्षात्मक प्रवृत्ति तीव्र हो गई और बिना कुछ सोचे - समझे मैं हस्तक्षेप करने के लिए दौड़ पड़ा। आक्रामक कुत्तें तितर - बितर हो गए और मैंने घायल स्पष्ट रूप से हिले हुए पिल्ले को अपनी बाहों में ले लिया। मुझे नहीं पता था कि करुणा का यह कार्य एक ऐसा बंधन बनाएगा जो हम दोनों के जीवन को बदल देगा।

मैंने उसे शांत करने के लिए पानी पिलाया। फिर मैं पिल्ले को नजदीकी पशु चिकित्सालय ले गया। पशु चिकित्सक का पूर्वानुमान आशाजनक नहीं था। उसे काफी चोटे आई थी। इसके बाद के दिनों में डॉक्टरों के दौरे, दवाओं और चौबीसों घंटे देखभाल का दौर शुरु हो गया। मैंने इस कुत्ते के चिकित्सा होने के दौरान संरक्षक होने की जिम्मेदारी लेने का फैसला लिया। मैंने उसका नाम राजा रख दिया। राजा को उस आघात से बाहर निकालना काफी कठिन था जो उसने झेला था। वह काफी असुरक्षित महसूस करता था और घर पर, वह अक्सर अपना सिर नीचे करके लिविंग रूम के एक कोने में चला जाता था।

मुझे उसे समय देने की सलाह दी गई। आखिरकार, समय बड़ा उपचारक है। लगभग एक सप्ताह में, राजा, सर्तक और आशंकित होते हुए भी, अपने कोने से बाहर निकलना शुरु कर दिया। उन एक बार डरी हुई आँखों में भरोसा था। इसके बाद जो परिवर्तन आया वह उल्लेखनीय था।

इस बंधन के सबसे खुबसूरत पहलुओं में से एक वह अनकही समझ थी जो हमने विकसित की। मैं समझ सकता था कि जब राजा दर्द या परेशानी में था, तो उसने मेरी उपस्थिति को आराम और सुरक्षा के स्रोत के रूप में पहचानना सीख लिया था। हमने अनगिनत घंटे एक साथ बिताएं, घावों पर मरहम लगाते हुए और बस एक - दूसरे के लिए मौजूद रहते हुए।

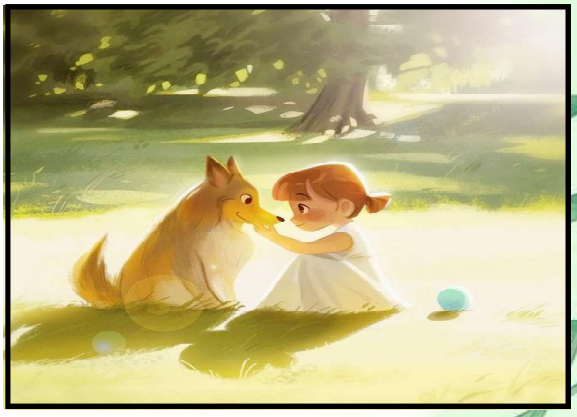

कुत्ते के ठीक होने तथा धैर्य और अटूट प्रेम ने मुझे बदल दिया। मैंने निःस्वार्थता और सहानुभूति की शक्ति सीखी। राजा को बचाने के कार्य ने मुझे प्रजाति की परवाह किए बिना किसी अन्य जीवित प्राणी की देखभाल करने की मानव हृदय की अविश्सनीय क्षमता दिखाई।

उस महत्वपूर्ण सुबह को छः महीने बीत चुके हैं। एक समय भयभीत और चिंतित रहने वाला कुत्ता अब एक आश्वस्त और स्नेही साथी है। कोई भी सैर उसके बिना पूरी नहीं होती क्योंकि हम एक साथ भारत के विभिन्न हिस्सों का अन्वेषण करते हैं और जीवन की सरल खुशियों में आनंद लेते हैं।

याद मेरे घर की

सुश्री शिवानी छेत्री
बहन - सुश्री दीपिका छेत्री
लिपिक/टंकक

बैठी हूं आज, अंधेरे में,
इस लुप्त कालकोठरी में।
याद जब घर की आती है,
तो दिल में हलचल सी मच जाती है।।

याद जब घर की आती है,
घर जो कि दूर है मुझसे,
घर जो कि खुशी का मंदिर है,
मुझे वो घर की याद सताती है।

मां बाप का प्यार था बचपन,
मां मेरी बुला रही है।
याद उन्हें सता रही है,
घर की याद आ रही है ।।

पिताजी मेरे बलवान,
रो पड़े होंगे मन ही मन,
छुपा रहे है दुख,
अपने बच्चों के लिए ।।

वो पल था बचपन का,
खेलने कूंदने का लम्हा था।
आज बंधी हूं ज़िम्मेदारियों से,
बंध के बैठी हूं इस कालकोठरी में ।।

धीरे धीरे रात ढल जाती है,
दुनिया अपनी नींद में गुम हो जाती है।
बैठी हूं मैं वहां इस अंधेरे में,
गुम हुई अपने घर की यादों में ।।

पहला प्यार

श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

एक अरसे बाद आज उसका कॉल आया,
नाम डिलीट था, मगर नंबर याद था उसका।
सोचा कि शायद गलती से लगा होगा तो थोड़ा इंतजार करूं,
खुद ही काट लेगी जब लगेगा बेखयाली से लग गया है कॉल।।
मगर जब कुछ सेकेंड्स तक कॉल नहीं काटा, तो
फिर उठाया मैंने उसका वो पहला हेलो ही, काफी सालों बाद,
उस एक हेलो ने काफी सारे पन्ने पलटे मेरी यादों के,
सारी यादें जिनका जिक्र भी था अब मेरी जहन में।
शायद मैंने उस चैप्टर का सबक भी ले लिया था,
मगर इम्तेहान अभी बाकी था।
इतना सब सोचते - सोचते मैं भूल गया कि मैं एक कॉल पर हूँ,
तभी उसका दूसरा हेलो आया इस बार, मैंने भी जवाब दिया,
फिर बातों - बातों में पता चला कि,
कुछ पुराने रंज जो आज मिटाने है उसको,
वही रंज जो मैं भूल गया था।
खैर बातें हुई रंज मिटी और कॉल कट गया।
मगर अब ये नंबर दुबारा सेव करूं या नहीं,
बस अब फिर से इसी कश्मकश में ले आई है जिदगी हमें,
खैर अब फायदा भी क्या है नंबर तो याद है ना मुझे।

कुंठा

श्री अशोक कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

कुंठा का अभिप्राय निराशा, अंसतोष की भावना, जिसें अंग्रेजी में 'फ्रस्ट्रेशन' आदि से होता है। जब किसी व्यक्ति या युवापीढ़ी में किसी वस्तु या व्यक्ति को पाने की अभिलाषा होती है और उसे वह अभीष्ट वस्तु या व्यक्ति प्राप्त न हो, तो कुंठा मन मस्तिष्क या दिल में उत्पन्न होती है। इसी निराशा अथवा कुंठा के कारण ईर्ष्या का भी जन्म होता है। जैसे युवा वर्ग को वांछित जॉब, नौकरी और रोजगार न मिलना और उसके बेरोजगार होने से वह कुंठा का शिकार हो जाता है।

किसी भी राष्ट्र अथवा देश के नवयुवक उस राष्ट्र के विकास एवं निर्माण की आधार शिला होते हैं। स्वस्थ नवयुवक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं, परन्तु रोजगार के अभाव में हमारे देश के युवकों की मानसिक दशा रूग्ण होती जा रही है और इन परिस्थितियों में देश का विकास मात्र कोरी कल्पना तक ही सीमित हो जाता है उसे यथार्थ स्वरूप दिया जाना संभव नहीं है।

आज विश्व पटल पर रूस-यूक्रेन का युद्ध होना, ईरान - इजराइल का युद्ध होना तथा अभी हाल ही में बांग्लादेश में जनाक्रोश के कारण तोड़फोड़ आदि कुंठा का ही जीवंत परिणाम है। बांग्लादेश के आम जनमानस में इतनी अधिक कुंठा व निराशा उत्पन्न हुई कि वे देश में स्थापित हिंदू मंदिरों में बम-ब्लास्ट कर तोड़ फोड़ कर डाले हैं। कपड़ा फैक्ट्री, व्यापार और कितने ही व्यवसायों को तहस - नहस किया है। यहाँ तक की प्रधानमंत्री के प्रति आक्रोश इतना बढ़ा कि उन्हें देश छोड़ना पड़ा। कुंठा जब मन व मानसिक पटल में इतनी अधिक बढ़ जाती है कि वह बेकाबू व अनियंत्रित हो जाए तो वह व्यक्ति बगावत करने पर आमादा हो जाता है।

प्रत्येक देश की सरकार में पदासीन प्रतिनिधि व अधिकारियों को चाहिए कि वे देश के हर वर्ग की जनभावना का सम्मान करें एवं उनके हित में ही नियम अधिनियम बनाएं तथा उनके मानसिक पटल पर ऐसी कुंठा अपना निवास स्थान न बना पाएं। विशेषकर युवावर्ग कुंठित न हो क्योंकि उनमें उम्रदराज लोगों की तुलना में धैर्य कम होता है और उनमें आक्रोशित होने की संभावना अधिक होती है।

जय हिंदी, जय भारत।

घर से दूर एक परिवार

श्रीमती आकांक्षा पटेल
पत्नी - श्री सुरेंद्र कुमार
आशुलिपिक

एक गाँव में तीन महिलाएं रहती थी जिनका नाम था - राधा, सीमा और नेहा। उन तीनों के पति नौकरी करते थे। वे तीनों पति के ऑफिस जाने के बाद घर में अकेले रहती थी। उन तीनों की मुलाकात एक पार्क में हुई जहाँ वे रोज सुबह टहलने जाती थी। धीरे - धीरे उन तीनों की दोस्ती गहरी होती गई। वे तीनों एक - दूसरे के घर आने - जाने लगी और ऐसे ही उनका समय बीतने लगा।

एक बार की बात है - नेहा के बच्चे का जन्मदिन पड़ा तो उसने राधा और सीमा को भी खाने पर बुलाया था। शाम होते ही राधा और सीमा नेहा के घर पहुँच गई। नेहा ने और भी बहुत सारे लोगों को बुलाया था। सब ने मिलकर उसके बच्चे का जन्मदिन मनाया। सब कुछ खत्म होने के बाद वे तीनों बैठकर बातें करने लगी। पर सीमा का स्वभाव थोड़ा अलग था। उसने वही सबके सामने सारे गिफ्ट खोलकर देखने लगी जिससे बाकी दो सहेलियों को उस पर हँसी आ गई। थोड़ी देर बाद सब अपने - अपने घर चली गईं।

एक दिन नेहा के घर के बगल में एक महिला रहने आई जिसका नाम सोनी था। उसके पति भी उसी ऑफिस में काम करने आए जिसमें उन तीनों के पति करते थे। सोनी की मुलाकात नेहा से हुई और वे जल्द ही एक दूसरे की अच्छी दोस्त बन गई। नेहा ने उसका परिचय सीमा और राधा से भी करवाया। और फिर वे चारों सहेलियाँ एक साथ मिलकर रहने लगी और काफी खुश थी क्योंकि घर से दूर उनका एक परिवार जो बन चुका था।

कोट्टनकुलंगरा देवी मंदिर

श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.
कनिष्ठ अनुवादक

'कोट्टनकुलंगरा देवी मंदिर' माँ दुर्गा या शक्ति का स्वरूप आदि शक्ति का एक हिंदू मंदिर है, जो भारत के केरल के कोल्लम के 'चवरा' में स्थित है।

आरंभिक इतिहास

ऐसा माना जाता है कि जहां मंदिर स्थित है, वह कभी जंगल का हिस्सा था, एक शांत क्षेत्र जो घने पेड़ों, पौधों और लताओं से घिरा हुआ था। उस स्थान के उत्तर - पश्चिमी कोने पर एक छोटा गहरा तालाब मौजूद था जिसे 'भूतकुलम' के नाम से जाना जाता था। उस इलाके में रहने वाले लोगों का मानना था कि यह जहरीले सांपों का आश्रय स्थल था। पूर्वी किनारे पर एक विशाल विस्तृत गहरा तालाब था। बारिश के दिनों में वहां से एक जलधारा निकलती थी जिससे आसपास का क्षेत्र उपजाऊ और खेती योग्य हो जाता था। चूंकि यह स्थान घास और शुद्ध पानी से भरा हुआ था, इसलिए आस - पास के लोग अपनी - अपनी गाय के साथ वहां इकट्ठा होते थे।

पौराणिक कथा - कथित

पौराणिक कथा के अनुसार, इस स्थान पर, एक दिन गो-पालकों का एक समूह खेल रहा था। उन्हें भूतकुलम के दक्षिणी भाग में एक पत्थर मिला। तब उन्होंने समय व्यतीत करने के लिए मंदिर के उत्सव के रूप में खेल खेलना आरंभ

किया। नारियल के खंभों, पत्तों और कोमल पत्तियों का उपयोग करके एक अस्थायी मंदिर का निर्माण किया गया। नारियल के छोटे बीजों एवं लकड़ियों की सहायता से घोड़े का एक छोटा सा रूप बनाया गया जिसे उत्सव में खींच कर मंदिर ले जाने की प्रथा थी। उसी प्रकार बालिकाएँ फूलों की मालाएँ तैयार करती थीं और मंदिरों में पूजा के दीपक जलाती थीं। अब वहाँ बालिकाएँ तो थी नहीं, तो इस परंपरा को स्वीकार करते हुए गो-पालकों ने महिलाओं की पोशाक पहनकर मंदिर में पूजा की। एक लड़का पूजारी बना, उसने नारियल की गिरी से तैयार दूधिया तरल को उबाला, औषधीय तेल (उरुक्कू वेलिचेन्ना) निकाला और ठोस पदार्थ (कोट्टन - इसी से मंदिर का नाम कोट्टनकुलंगरा रखा गया है) अलग किया, जिसे देवी को 'नैवेद्यम' के रूप में चढ़ाया गया। उसके बाद पूजा शुरु की गई, बच्चे खेल ही रहे थे कि अचानक पुजारी बना बालक ऊँचे स्वर में बोलने लगा मानो जैसे देवी माँ स्वयं प्रकट हुई हो।

भयभीत बच्चों ने बड़ों को घटना के बारे में समझाया और ज्योतिषी से बात करने पर उन्होंने सुझाव दिया कि पत्थर में अलौकिक शक्तियां हैं और मंदिर निर्माण के तुरंत बाद पूजा शुरू की जानी चाहिए। इसी प्रकार उस स्थान पर मंदिर का निर्माण हुआ और बालकों द्वारा की गई हर एक क्रीड़ा को प्रथा के रूप में आज तक मनाया जा रहा है तथा जो कोट्टन बालकों ने 'नैवेद्यम' के रूप में चढ़ाया था उसे ही प्रसाद के रूप में भक्तजनों को दिया जाता है।

चमयाविलक्कु

कोट्टनकुलंगरा महोत्सव (या कोट्टनकुलंगरा चमयाविलक्कु) हर साल मंदिर में आयोजित किया जाता है, जिसमें राज्य भर से और अब इसके बाहर के भी पुरुष भक्त, पूर्ण व्रत की शुद्धि के साथ महिलाओं की पोशाक पहनते हैं। उत्सव में महिलाओं का रूप धारण करना पारंपरिक अनुष्ठान का हिस्सा है और रात में वे पारंपरिक दीपक पकड़ते हैं तथा केरल के वाद्य यंत्र - 'चेंडामेलम' के साथ मंदिर तक जुलूस में चलते हैं। भक्त देवी का आशीर्वाद लेने के लिए मंदिर में आते हैं जिसके द्वारा उनकी मनोकामना पूर्ण होती है।

कुरुत्तोला पंदल

मंदिर की किंवदंती और उत्पत्ति की स्मृति में, हर साल प्राचीन मंदिर के मॉडल का निर्माण किया जाता है जिसे 'कुरुत्तोला पंदल' कहते हैं। कुंजालुम्मूडु से देवी की यात्रा के समय भक्त कुंजालुम्मूडु से आराट्टुकडवु तक लंबी कतारों में खड़े रहते हैं। इस आध्यात्मिक जुलूस को देखकर, भक्तों को असीमित मात्रा में आध्यात्मिक आनंद मिलता है और उनका मानना है कि यह दृश्य उन सभी को आराम और मानसिक आनंद प्राप्त करने और जीवन के अप्रत्याशित दुखों से छुटकारा पाने में मदद करेगा।

जीवथा एजुन्नलथु

'जीवथा एजुन्नलथु' केरल के अधिकतर देवी मंदिरों में होता है। पारंपरिक पोशाक ("थट्टुडुक्कल") पहनकर और कमर और सिर पर मजबूती से तौलिये बांधकर, वे 'जीवथा' को अपने कंधों पर रखते हैं और कदम-नृत्य करते हैं। जीवथा एजुन्नलथु के पीछे मिथक यह है कि उत्सव के दिनों में देवी मंदिर से निकलकर अपने भक्तों के पास जाती हैं और आशीर्वाद के लिए भक्त अपने घर पधारी देवी को 'अनपरा' - पाँच विशेष बर्तनों में फूल, केलें, चावल, धान और खील चढ़ाते हैं।

अपनी इन अनोखी प्रथाओं एवं देवी चैतन्य से इस मंदिर को विश्वख्याति प्राप्त हुई है, और इसे अपनी जन्म भूमि प्राप्त कर मैं स्वयं को धन्य मानती हूँ। अपने इस छोटे से लेख के द्वारा इस प्रसिद्ध मंदिर का विवरण आप लोगों तक पहुँचाने पर मुझे अत्यधिक आनंद प्राप्त हुआ है।

परिवर्तन

श्रीमती आकांक्षा पटेल
पत्नी - श्री सुरेंद्र कुमार
आशुलिपिक

मैंने जिंदगी को तेजी से बदलते देखा है,

कल तक जो साथ थे, उन्हें पीछे छूटते देखा है।

जिस माँ की गोद में बचपन बिताया है,

उसने दूसरे को देके किया पराया है।

दूरियां बढ़ती जा रही है, रिश्तों में इतनी,

कि लोगों को इंसानों से दूर और मशीनों के पास होते देखा है।

एक दोस्त, जिससे बाते किया करती थी,

उसके साथ भी रिश्ते को बदलते देखा है।

लोग कहते है इस दुनिया में कुछ नहीं बदलता,

पर वक्त के साथ मैंने बहुत कुछ बदलते देखा है।

निश्चय

श्री राज्यपाल देवकोटा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आज उठो तुम,
निश्चय ये लेकर।
बढ़ना आगे ही है,
निर्णय मेरा।।
न लो कदम पीछे,
ठान लिया जब बढ़ने को आगे।
तूफान दिखे आगे भी तो,
दम भरके आगे बढ़ते चलो।।
मंजिल मिलती नहीं आसान राहों पर,
लहरों के थपेड़ों को झेलना पड़ता है।
टीलों पर तो हर कोई चढ़,
सगरमाथा पर झंडा हर कोई लहरा न पाए।।
मुश्किल राहों से जो गुजरे,
मनचाही मंजिल उसे ही मिले।
मोती पाने की लालसा रखे जो,
गहरे पानी में उतरे वही।।

प्रशंसा

श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

सुनो, यह तुम्हारे लिए,
जानता हूँ थक गई हो तुम।
वह एक परफेक्ट लड़की की डेफिनेशन में फिट होते होते।
कभी किसी को तुम्हारे बोलचाल से तकलीफ होने लगती है,
तो कभी किसी को तुम्हारे काम से।
जैसे हर बात में तुम्हें रोक-टोक लगाई जाती है,
हर कदम पर तुम्हें रोक लगाई जाती है।
मगर तुम याद रखना कि तुम इन सब से ऊपर हो,
तुम्हारे सपने खूबसूरत हैं,
शायद इस सफर में तुम ही अपने सबसे भरोसेमंद साथी हो,
मगर हाँ, तुम जैसी भी हो खुद के लिए काफी हो।

प्राकृतिक आपदाएँ : चिंतन

श्रीमती अखिलेश कुमारी
पत्नी - श्री अशोक कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

कृति में विद्यमान विभिन्न प्रकार के तत्वों का अत्यधिक दोहन, दुरुपयोग और अनावश्यक प्रयोग के परिणाम स्वरूप प्राकृतिक आपदाएँ प्रकट होती है, जब मानव प्रकृति का दुरुपयोग अत्यधिक रूप से करता है तो प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाता है और इस प्रकार प्रकृति मानव के सुख - सुविधाओं के विपरीत अपना रौद्र रूप धारण करती है। पेड़ों के अत्यधिक कटान से मौसम का संतुलन बिगड़ गया और चाहे वह वर्षा हो, चाहे वह गर्मी हो और चाहे वह सर्दी हो ये सभी अपनी चरमसीमा तक पार कर जाते हैं।

प्राकृतिक आपदाएँ शक्तिशाली और खतरनाक घटनाएँ हैं जो प्रकृति में असंतुलन के कारण उत्पन्न होती है। प्राकृतिक आपदा कई प्रकार की होती है जैसे सूखा, बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन, सुनामी, आंधी, तूफान आदि। ये सभी आपदाएँ अचानक आती हैं और क्षणों में सर्वत्र विनाश का तांडव कर देती है।

इस वर्ष वर्षा से दिल्ली की एक कोचिंग के बेसमेंट में अचानक जलभराव से कोचिंग की तीन छात्राओं की दर्दनाक मौत का मंजर देश और दुनिया ने देखा है तथा एक 3 वर्ष की बच्ची के साथ 22 वर्षीय माँ ने नाले में गिर कर जान गंवाई है। केरल के वायनाड क्षेत्र में वर्षा और भूस्खलन ने लगभग 500 जिंदगियों को तबाह कर दिया।

प्राकृतिक आपदा प्रबंधन में सभी जिम्मेदार अधिकारी और कर्मचारी तथा ठेकेदार और इंजीनियर असंवेदनशील होकर काम करते है। वे इतने लापरवाह और स्वार्थी हो गए है कि अपना पेट भरना तो जानते है परंतु आम आदमी जनमानस की जिंदगियों का कोई मोल नहीं समझते।

इसलिए कहा गया है कि :-

"जाके पैर न फटी बिवाई,
सो क्या जाने पीर पराई"

आपदा प्रबंधन से जुड़े, समस्त कार्मिकों को नैतिकता के भाव को ध्यान में रखना चाहिए। उन्हें इस बात का ज्ञान, भाव और संवेदन शीलता का भाव होना चाहिए।

नाला, सीवेज, पुल, सड़को के गड्ढ़ों के मरम्मत कार्य वर्षा के मौसम आने से पूर्व हो गया होता तो शायद ये मौत का मंजर कुछ कम हो जाता।

ऐसी दुर्घटनाएँ होने के उपरांत नेतानगरी, राजनीति अपनी कुर्सी बचाने और वोटबैंक की खातिर एक दूसरे पर दोषारोपण करने से तनिक भी हिचकते नहीं है।

यदि आम आदमी, वंचितों का सशक्तीकरण होता है तो देश और मजबूत होता है। आम आदमी, आम जनमानस की खुशहाली से देश खुशहाल होगा। साधारण जनमानस की प्रगति ही देश की प्रगति है।

जय हिंदी जय भारत।

मेरा मेघालय सैरसपाटा

अंशुमान शर्मा
सुपुत्र - श्री अशोक कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

गत वर्ष अपने पापा के साथ बिना योजना के जून के महीने में मेघालय घूमने का निश्चय किया और तत्काल ही प्रयागराज, रेलवे स्टेशन से गुवाहाटी के लिए रवाना हुआ। यद्यपि टिकट वेटिंग में मिली थी इसलिए पापा ने थर्ड ए. सी. के डिब्बे में मुझे भी बैठा लिया। रात को सोने के समय सभी यात्री अपनी कन्फर्म सीट पर सो गए और मेरे पापा ने कोच के अटेंडेंड से बात करके **600** रुपए देकर अपने कपड़े रखने वाले बॉक्स जिसमें कि ए.सी. सीट की ओर से थोड़ी थोड़ी ठंडी-ठंडी हवा आ रही थी उसमें मुझे सुला दिया।

अगले दिन ट्रेन में चेकिंग पर आए आर.पी.एफ. के जवानों को शक हुआ कि कहीं कोई चोरी का तो बच्चा नहीं है इसलिए उन्होंने मेरे पापा से पूछा कि इस कपड़े वाले बाक्स में बच्चे को क्यों बैठाए हो ? परंतु पापा ने सारी कहानी टिकट ना कन्फर्म होने की बात बताई। इसके बाद मैं पहली बार कामाख्या रेलवे स्टेशन पहुँचा। वहाँ से सीधा शिलांग के लिए टैक्सी मिल गई पर मैं अत्यधिक थके होने के कारण शीघ्र ही टैक्सी में सो गया और मैं कब शिलांग पहुँच गया मुझे पता ही नहीं चला।

अगले दिन पापा को ऑफिस जाना था। मैं पापा के साथ ऑफिस गया तथा उसके अगले दिन पापा के सहकर्मी के क्वार्टर में आंटी के साथ बना रहा।

जब शनिवार और रविवार आया तो पापा ने चेरापूंजी घूमने के लिए प्लान बनाया और टैक्सी बुक किया। साथ में पड़ोसी अंकल भी अपने परिवार के साथ चलने के लिए तैयार हुए।

मैंने अपने पापा के साथ और पड़ोसी अंकल तथा उनके बच्चों के साथ अर्वा केव, सेवन सिस्टर्स और मौसमी केव में खूब मस्ती किया। मौसमी केव में तो थोड़ा असावधानी होने के कारण मौसमी केव के रास्ते में निकला हुआ कूबड़ की तरह पत्थर मेरे माथे में लगा और मैं हाथ पकड़ कर रह गया। पापा ने मुझे सावधानी से चलने की सलाह दी।

मैं क्या करता अर्वा मौसमी केव में नीचे पैरों के पास फुटपाथ का पानी बह रहा था और मेरे सिर के ऊपर कूबड़

जैसे निकले हुए छोटे-छोटे पत्थर। यदि मैं ऊपर देखता तो नीचे बहते पानी में जूते गीले हो जाते और मैं नीचे देखता तो सिर के ऊपर निकले हुए पत्थर लग जाते। इसीलिए बड़ी सावधानी के साथ मैंने वह मौसमी केव की यात्रा पूरी की और सायं को मैं घर लौट आया। काफी थके होने के कारण पापा ने मेरे पैरों में सरसों के तेल से मालिश की। इसी तरह पापा ने मुझे शिलांग के पास के वार्ड्स लेक और लैडी हैड्ररी पार्क आदि सभी जगह घुमाया और मैंने लैडी हैड्ररी पार्क में खूब चिड़ियाघर के जानवरों, पानी सारसों, बत्तखों तथा मछलियों को आलू भुजिया वाला नमकीन तथा बिस्कुट और चिवड़ा खिलाकर उनके साथ खूब आनंद किया और लगभग एक महीने शिलांग की सैरसपाटा करने के बाद मैं वापस प्रयागराज, उत्तर प्रदेश लौट गया क्योंकि मेरे स्कूल की गर्मी के छुट्टी के दिन समाप्त होने वाले थे और स्कूल खुलने वाले थे।

इस प्रकार मैंने शिलांग, मेघालय सैरसपाटा पूर्ण किया।

प्रार्थना

सुश्री ब्रेंडा शानेन सियेम
सुपुत्री - श्रीमती बेथेल लिंडा सियेम
वरिष्ठ लेखाकार

वर दो प्रभु ऐसा हमें,
शक्ति संपन्न हो सकें।
देश सेवा हित हम सभी,
सर्वस्व न्योछावर कर सकें।।
वर दो प्रभु ऐसा हमें,
असत्य मार्ग पर कभी ना चलें।
कटु वचन से दूर रहकर,
सत्य मार्ग का पालन करें।।

भेद - भाव आए ना मन में,
ऐसी हम पर हो कृपा।
पर हित हो लक्ष्य हमारा,
करें सभी को प्यार सदा।।
हिंद देश की शान बनकर,
गौरवमय करें शस्य - श्यामला।
जगत्गुरु हो देश अपना,
हो बस हमारी यही कामना।।

बेफिक्री वाला ऐतवार

श्रीमती रेनु नागल
पत्नी - श्री राजु नागल
डी. ई. ओ.

"रंग बदलती इस दुनिया में लोगों का ऐतवार कहाँ है।
बचपन में जो आता था बेफिक्री का वो ऐतवार कहाँ है।"

"तीज में पतंग उड़ाने वाला सावन का वो त्यौहार कहाँ है।
माचिस की डिबिया की गाड़ी और कागज की नाव का वो कारोबार कहाँ है।
बचपन में जो आता था बेफिक्री का वो ऐतवार कहाँ है।"

"अपनी शरारतों पर डरा, खाना ना खाने को लेकर लड़ना।
पल - पल चिंता करने वाली उस माँ की फटकार कहाँ है।
बचपन में जो आता था बेफिक्री का वो ऐतवार कहाँ है।"

"ना फटे हुए कपड़ों की चिंता, ना सूखी रोटी खाने का गम था।
ऐसा बेफिक्री का जीवन हर बार कहाँ है।
बचपन में जो आता था बेफिक्री का वो ऐतवार कहाँ है।"

"अब तो उम्र जवां हुई है जिम्मेदारियों से भरी हुई है।
छोटी - छोटी खुशियों की जीवन में अब भरमार कहाँ है।
बचपन में जो आता था बेफिक्री का वो ऐतवार कहाँ है।"

अभी बाकी है

सुश्री दिव्या कुमारी राय
सुपुत्री - श्री नवल किशोर राय
एम. टी. एस.

है हौसला, रख हिम्मत,
तेरी जीत अभी बाकी है।
जो गिर गए उन्हें भूल जा,
तेरी दौड़ अभी भी बाकी है।

जो थक कर रुक गया तू,
यह मत भूल बाज की उड़ान अभी भी बाकी है।
रास्ते खत्म हो गया तो क्या,
सारा मैदान अभी बाकी है।

हर सफर की मंजिल हो ये जरूरी नहीं,
हर हार के बाद भी तेरे अंदर का इंसान बाकी है।
थक गया है तो आराम कर ले इन राहों में,
क्योंकि हार की ना कोई माफी है।

इस जहान की भीड़ में खुद को न खोने देना,
क्योंकि तेरी पहचान अभी भी बाकी है।
धरती जीत ली तो खुश मत होना,
क्योंकि जीतना आसमान तुझे अभी भी बाकी है।

हारना नहीं है तुझे कभी भी,
क्योंकि सारा मैदान अभी भी बाकी है।

समानता

श्री राजु नागल
डी. ई. ओ.

चल रही थी चर्चा चाय की दुकान पर,
गैर बराबरी और बराबरी के मुकाम पर।
तभी एक साहब अपना विचार सामने रखते है,
मूँछों पर हाथ फेर चाय की घूट गिटकते है।।

बर्बाद कर दिया देश को इस योजना को खत्म होना चाहिए।
भला क्यूँ किसी विशेष को अधिक लाभ देना चाहिए।
"सही कहा भाई साहब" समोसा खाते एक सज्जन, बात में बात मिलाते है।
भीख माँगकर खाने वाले भीख माँगकर ही खाते है।

एक युवक ने कहा
"श्रीमान, अगर ऐसा है तो किसी वर्ग को क्यूँ बड़े होने का गुरूर है।
गौर से देखेंगे तो पता चलेगा कुछ सुविधाओं से वो छोटे आज भी दूर है।"

और ये हमारी ही बनाई गई तो व्यवस्था है।
हम ने ही तो किया हुआ है बड़ा और छोटा जन्म के आधार पर।
फिर दिक्कत क्या है छोटो के विशेष अधिकार पर।

हम छोड़ नहीं सकते अपना बड़ा होना, बड़े ही रहेंगे क्यूँ किसी बात का रोना।
रखिये अपने दिल पर हाथ और कहिए हम सब समान होना चाहते है।
नहीं कोई छोटा नहीं बड़ा इस बात को अपने दिल में बिठाते है।

मेरा है विश्वास कि आप ऐसा कर नहीं पाऐंगे।
जन्म से मिले अधिकार को अपने हाथों से मिटाऐंगे।

सच तो यह है अगर होता समान रूप से
"संसाधन और सुविधाओं का बँटवारा" आजादी के बाद।
तो ना ही होता विशेष अधिकार और ना ही होती इस मुद्दे पर बात।

पेरिस ओलंपिक 2024

श्री घनश्याम कुमार
भाई- श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

2024 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक का आयोजन फ्रांस में दिनांक **26** जुलाई **2024** से **11** अगस्त **2024** तक हुआ था । इसका मुख्य मेजबान शहर पेरिस था । इसका उद्घाटन फ्रांस के राष्ट्रपति इमानुएल माइक्रो द्वारा किया गया था । इसमें पहली बार ओलंपिक खेलों का आयोजन अभूतपूर्व तरीके से हुआ था । इसका आयोजन पहली बार खुले में सीन नदी पर हुआ था । इसमें दलों की परेड ट्रैक पर नहीं बल्कि नदी में नौकाओं से हुआ था । इसके उद्घाटन समारोह में लगभग सवा तीन लाख दर्शक मौजूद थे एवं उद्घाटन की शुरुआत रात के **11:00** बजे से हुई थी । इस प्रतियोगिता में कुल **206** देश के **10,714** खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था ।

पेरिस ओलंपिक **2024** का शुभंकर फ्रिज है, जो ट्रेडिशनल स्मॉल फ्रीजियन कैप पर आधारित है । इसका दृष्टिकोण यह प्रदर्शित करना है कि खेल मानव जीवन को बदल सकता है । इस ओलंपिक में एथलीट पहली बार पारंपरिक लाल रंग की जगह बैंगनी रंग की ट्रैक पर दौड़े थे । इस ओलंपिक में पहली बार भारतीय निशानेबाज सभी स्पर्धा में भाग लिए थे एवं पहली बार इस ओलंपिक में महिला एवं पुरुषों की संख्या बराबर थी ।

पेरिस के सेन-सेंट-डेनिस में एक खेल गांव बनाया गया है । यहां **9000** एथलीट समेत कुल **14500** लोग ठहरे थे । **70** फुटबॉल मैदानों जितना बड़ा खेल गांव पेरिस की ऐतिहासिक सीन नदी के दोनों तरफ बनाया गया था । सीन नदी पर बना पुल इसके दोनों हिस्से को जोड़ता है । खेल खत्म होने के बाद इसे **6000** लोगों के घरों और **6000** कर्मचारियों के दफ्तरों में बदला जाएगा ।

पेरिस ओलंपिक में कुल **5,00,084** पदक विजेताओं को देने के लिए तैयार किए गए हैं । स्वर्ण पदक के मध्य में षट्कोण आकार में एफिल टावर के **17** ग्राम धातु का प्रयोग किया गया है । यह धातु एफिल टावर के उन हिस्सों से ली गई है, जिन्हें **20**वीं शताब्दी में नवीकरण कार्यों के दौरान हटाया गया था । सभी पदकों के रिबन में भी एफिल टावर की जाली का डिजाइन बनाया गया है ।

पेरिस ओलंपिक **2024** में पहला मेडल **10** मीटर राइफल मिक्सड टीम में जर्मनी को हराकर कजाकिस्तान ने कांस्य पदक जीता था । कजाकिस्तान ने जर्मनी के खिलाफ **17–5** से जीत हासिल करते हुए यह मेडल अपने नाम किया । जबकि पेरिस ओलंपिक का पहला गोल्ड मेडल चीन ने **10** मीटर राइफल मिक्सड टीम में कोरियाई जोड़ी को हराकर जीता था । वहीं भारत की ओर से मनु भाकर ने **10** मीटर एयर पिस्टल इवेंट में कांस्य पदक जीत कर भारत को पहला मेडल दिलाया । इस प्रकार मनु भाकर ओलंपिक शूटिंग पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी । मनु भाकर ने मिक्स टीम इवेंट में सरबजोत सिंह के साथ मिलकर भारत को दूसरा कांस्य पदक दिलाया । मनु भाकर ने ओलंपिक के एक

ही संस्करण में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय बनकर इतिहास रच दिया । स्वप्निल कुसाले ने शूटिंग की मेंस **50** मी राइफल थी पोजीशन में भारत को तीसरा कांस्य पदक दिलाया । इसके बाद मेंस हॉकी टीम ने कांस्य पदक अपने नाम किया । रेसलर अमन सहरावत ने मेंस **57** किलो फ्रीस्टाइल में कांस्य पदक जीता एवं वह भारत के सबसे कम उम्र के ओलंपिक पदक विजेता बने । नीरज चोपड़ा ने भारत की झोली में पहला सिल्वर मेडल डाला ।

इस प्रकार भारत ने एक सिल्वर पदक एवं पांच कांस्य पदक सहित कुल **6** पदक जीता । कुल मिलाकर भारत ने अब तक ओलंपिक में **41** पदक जीते हैं । सबसे अधिक पदक के मामले में संयुक्त राज्य अमेरिका **38** स्वर्ण, **44** रजत एवं **42** कांस्य पदक सहित कुल **124** पदक जीत कर अपना पहला स्थान पक्का कर लिया । वही कुल स्वर्ण पदक के मामले में **48** स्वर्ण पदक जीतकर पीपुल्स रिपब्लिक आफ चाइना प्रथम स्थान पर रहा ।

2024 के पेरिस ओलम्पिक के रैंकिंग के मामले में भारत का **71** वां स्थान रहा ।

आसान नहीं है नारी होना

श्री गौतम वर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

आसान नहीं है नारी होना,
जिसके जन्म से ही घर में हो मातम का माहौल।
जिसको बचपन में ही सिखाया गया हो सब्र का पाठ,
जिसको बचपन से हो अपने सपने त्यागने की सौगात।।

जो कभी बेटी, कभी बहन, कभी मां का रूप,
लेकिन नहीं है इसका कोई अपना स्वरूप ।
पर कितना ही सह ले वो दिल का बोझ,
कोई ना समझे इसके मन का शोर ।।

सबने रखा है इसके कांधे पर घर का मान,
लेकिन कोई नहीं करता हैं इसके इच्छा का सम्मान ।
इसकी हिम्मत से ही हर जीवन हुआ है उत्तम,
लेकिन कोई नहीं करता है इसके जीवन का सम्मान ।

आसान नहीं है नारी होना,
जो है जग की जननी ।
उसको भी है कुछ लोग नोच खाने को तैयार,
आसान नहीं है नारी होना, आसान नहीं है नारी होना ।।

प्रकृति

श्री सुरेंद्र कुमार
आशुलिपिक

कभी शीतल, कभी ठंडी, हमें ये सांस देती है,
कभी ममता भरी हमको, ये अपनी छांव देती है।
अगर जो याद आये, घर की तो इतना बता देना,
अगर जो याद आये, घर की तो इतना बता देना ।
तू ऐसी माँ है जो सब कुछ आंचल से ढक लेती है।।
किसी पत्ते, किसी डाली पर, कोई फूल लगता है,

मगर हमने किया ऐसा कि अब सब भूल लगता है,
समय रहते बचा लो तुम, ये माँ जैसी प्रकृति को।
समय रहते बचा लो तुम, ये माँ जैसी प्रकृति को,
अगर कुछ ना हुआ ऐसा, तो सब कुछ धूल लगता है।।

मेरी जन्मभूमि

सुश्री ग्रेसी हातनेव वाइफेई
लेखाकार

वे खम्भे और दीवारें थे खड़े,
घूमती - फिरती मासूम अल्हड़ बच्ची थी मैं।
ईंटें और रेत एक एक कर रखी हुई,
आशा और गर्मजोशी से बना प्रत्येक कमरा ।।

उन हाथों को देखें जो घिस गए और फट गए,
फिर भी मेरे पिता का दृढ़ निश्चय नहीं रुका।
उनके मुँह बहते पसीने साथ भी चमक उठता,
जब मेरी माँ उन्हें देती रोटी का टुकड़ा।।

वहाँ अब एक मकान था खड़ा जिसे मैं घर कहूँ,
जहाँ झींगुर की आवाज़ें मुझे सुला देती।
और पक्षियों के गीत मेरी सुबह स्वागत करती,
वहाँ अब एक मकान था खड़ा जिसे मैं घर कहूँ।।

मणिपुर में यह स्थान, जहाँ हुआ मेरा जनम,
जहाँ जलधाराएँ और मैदान था सभी के खेल का मैदान।
वह स्थान जिसने मुझे तैयार किया जीवन के पथ को,
उन सब से ऊपर कड़ी मेहनत करने को।।

एक सुवर्ण सामान्य दिन की एक बढ़िया शाम,
एक ने नहीं की होगी कल्पना, वह शाम लेगी भयंकर नाम।
एक पल में हमारी आँखों के सामने,
हम अपनी यादों को आग की लपटों में जलते देखते।।

3 मई, यह दिन रहेगा,
अनादि काल से हमारे मन की आँखों में ताजा।
सपने हमारे साथ जमीन से मिट गए,
डरा कर भगाये गये, वहाँ से, जहाँ मेरा हृदय था, मेरी जन्मभूमि।।

रस्सी जल गई पर बल ना गया

सुशांत बी रसाईली
सुपुत्र - श्री राजेश कुमार रसाईली
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

हरे - भरे घास के मैदानों और घुमावदार जलधाराओं के बीच बसे एक सुरम्य गाँव के मध्य में, ऋषभ जयसवाल नाम का एक व्यक्ति रहता था। ऋषभ अपने गाँव में सबसे धनी था। उसके पास सबसे बड़ा खेत था और वह फैंसी कपड़े पहनता था जिसे देखकर हर कोई देखता रह जाता था। ऋषभ को अपनी संपत्ति का प्रदर्शन करना और बड़ी - बड़ी पार्टियाँ आयाजित करना बहुत पसंद था।

दुर्भाग्यवश, वह बहुत घमंडी था। वह सोचता था कि वह बाकी सब से बेहतर है। जब लोगों ने उसे पैसे के मामले में सावधान रहने के बारे में चेतावनी दी तो उसने उनकी बात नहीं मानी। उसने पैसा ऐसे खर्च किया मानो उसके पास असीमित राशि हो। यहाँ तक कि उसने उन लोगों का मजाक भी उड़ाया जिनके पास उसके जितना पैसा नहीं था।

एक वर्ष दुर्भाग्य ऋषभ पर बज्रपात की तरह टूटा। सूखे की एक श्रृंखला ने ऋषभ की फसलों को तबाह कर दिया, जिससे उसने वह सब कुछ खो दिया जिसके लिए उसने मेहनत की थी। एक बार घमंडी और अभिमानी व्यक्ति ने खुद को दिवालियापन के कगार पर पाया। फिर भी, ऋषभ नहीं चाहता था कि कोई उसका पतन देखे। उसने सिलवाया सूट पहनना और शानदार पार्टियाँ आयोजित करना जारी रखा।

ऋषभ के पड़ोसियों ने उसके दिखावटी प्रदर्शन के पीछे की हताशा को पहचानते हुए, दया से अपना सिर हिलाया। वे उसके जिद्दी अहंकार और उसके पतन को ना स्वीकार करने के बारे में कानाफूसी करने लगे। लेकिन ऋषभ आगे बढ़ता रहा, मानो उसके अहंकार ने उसकी ढहती दुनिया पर एक हल्का सा पर्दा डाल दिया था।

धन की भारी हानि के बावजूद ऋषभ के विलासतापूर्ण प्रदर्शन की कहानी पूरे गाँव में फैल गई, जिससे हर कोने और सभा स्थल पर बातचीत की बाढ़ आ गई। जिसने भी उसकी कहानी सुनी, उसने कहा : "अरे ये तो कुछ उस कहावत जैसा हो गया ना, कि रस्सी जल गई पर बल ना गया?"

नारायण भक्ति

श्रीमती मेघा रानी
पत्नी - श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

तुम ढूँढ रहे माधव को,
महादेव के बिना कैसे पाओगे ।
हर हर और नारायण में,
भेद भाव कैसे पाओगे ।।

सब कुछ इन्हीं का खेल है,
गोकुल में कान्हा,
तो कैलाश पर महादेव है ।
अयोध्या में राम,
तो उनके साथ रूद्र रूप हनुमान है।

कहीं माता पार्वती,
तो कहीं मां सीता है ।
कहीं द्रौपदी की लाज बचाई कृष्ण ने,
तो कहीं विष ग्रहण किया महादेव ने।
कभी गंगा की पहली आरती,
तो कभी कुरुक्षेत्र में अर्जुन का सारथी।।

शिव शून्य में विराजमान है,
नारायण फूंकते इस ब्रह्मांड में जान है ।
यह आकाश, यह अंबर शिव के ही अधीन है,
या यूं कहूं की सब नारायण में ही लीन है ।

हिंदी की पुकार

श्री विजय कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

उठो हे ! पुत्र,
कि माँ है तेरी पुकार रही।
दशा से त्रस्त,
उद्धार के लिए ललकार रही।।

कि ए पुत्र मेरे,
मेरे साए पला बढ़ा।
मेरी ममता के साए,
कि क्यूँ भूल गया।।

उस ममता के भावों को,
वाणी देने की क्षमता को।
वर्षों से रही मैं लिपटी जंजीरों में,
सिमटी शहीदों की तकदीरों में।।

तुम हो चली जो काया मलिन मेरी,
बस हो गई श्रद्धा विचित्र तेरी।

आई वो, जो पहन सुंदर परिधान,
दिया तथाकथित सभ्यता का दान।

और मम्मी के पुत्रों ने माँ को छोड़ दिया,
जन्मों का बंधन सॉरी कह तोड़ दिया।

अपने ही घर में हुई आज परायी है,
मालकिन वो जो दूर देश से आई है।

पहचान, दिवस, पखवाड़े से बची है,
ऐसी किस्मत हिंदी की राजनीति ने रची है।
बजट आवंटन ही जीने का सहारा है,
बस अनुवादकों का जिम्मा सारा है।

रिर्पोट को आँकड़ों से भर देते है,
शील्ड, प्रोत्साहनों से जी हर लेते है।
फिर सितंबर में व बहुत याद आएगी,
आयोजनों, पुरस्कारों से सबको लुभाएगी।

धन्यवाद ज्ञापन विदाई का इशारा है,
ऐसे कर, लिया अपनो ने किनारा है।

कि उपेक्षा का ये दर्द अब नहीं सहा जाता,
समर्थ पुत्रों के होते लाचार नहीं रहा जाता।

तो आज फिर भर आँखों में नई आशा को,
पुत्रों को अपने अंक समेटने की अभिलाषा को।

उठो हे ! पुत्र कि माँ है तेरी पुकार रही,
दशा से त्रस्त उद्धार के लिए ललकार रही।

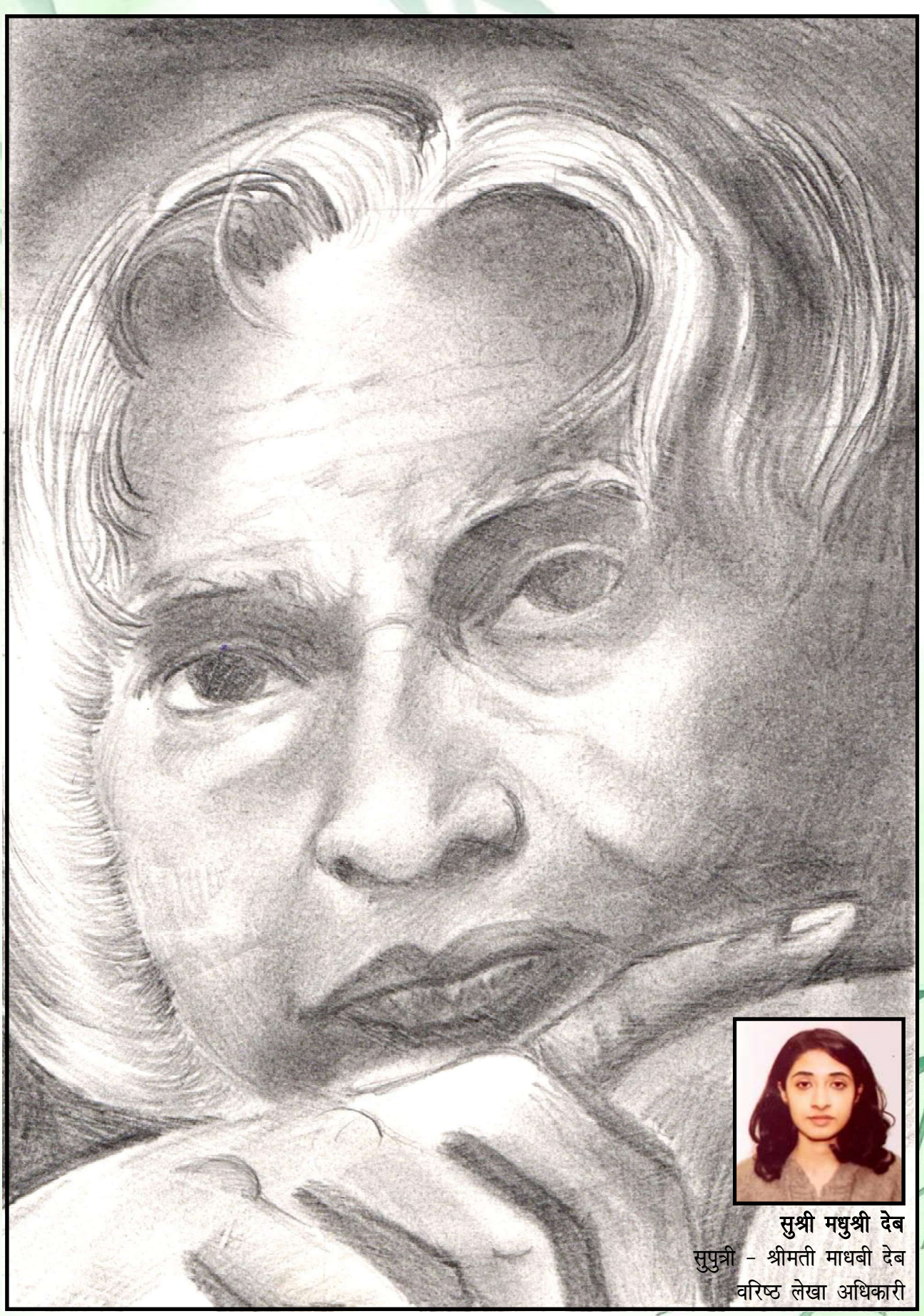

सुश्री मधुश्री देब
सुपुत्री - श्रीमती माधबी देब
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सुश्री तनुश्री दे
सुपुत्री - श्री पार्थ ज्योति दे
सहायक लेखा अधिकारी

विकास और प्रकृति

सुश्री ग्रेसी हातनेव वाइफेई
लेखाकार

विकास को एक ऐसे वाकया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो बदलती परिस्थिति में एक नए चरण का निर्माण करती है। यह एक प्राकृतिक वृत्तांत है, और प्रत्येक जीवित वस्तु विकास की प्रक्रिया से गुजरती है; मनुष्य एक बच्चे से वयस्क और वयस्क से जरा तक विकसित होता है, बीज धीरे-धीरे पौधों या बड़े पेड़ों में विकसित होते हैं और सूची बढ़ती जाती है। मूल विचार यह है कि प्रकृति विकासात्मक प्रक्रिया का विरोध नहीं करती है, वास्तव में वह विकास की पक्षधर है, बशर्ते विकासात्मक प्रक्रिया अन्य संसाधनों को नुकसान पहुंचाए बिना निरंतर स्तर पर की जाए।

प्रकृति में खुद को और अपने संसाधनों को पुनःपूर्ति करने और पुनर्स्थापित करने की क्षमता है। हालाँकि अवांछनीय स्तर पर मानवीय हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप प्रकृति का दोहन हुआ है और विकास के प्राकृतिक चक्र में बड़े असंतुलन पैदा हुए हैं। मनुष्य, सभी प्राणियों में से एक महाप्रजाति होने के कारण मस्तिष्क कोशिकाओं का बड़े पैमाने पर विकास हुआ है। इससे आश्चर्यों और विस्मयकारी कारकों का निर्माण हुआ है, लेकिन प्रकृति की कीमत पर संयोजकता के विशेष पुलों से पृथ्वी काफी छोटी हो गई है। समय के साथ इंसानों द्वारा किये गए आविष्कारों ने जीवन को कई क्षेत्रों में सरल और आसान बना दिया है। सबसे सरल उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति अपने पास उपलब्ध साधारण उपकरणों, जैसे चाकू, कलम, कपड़े आदि के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकता है। ये सब पिछले हजार वर्षों या उससे भी अधिक समय में हुए विकास के माध्यम से हमारे जीवन की तस्वीर में आये हैं। आज के युग में, मानव मस्तिष्क के विकास ने अकल्पनीय ऊंचाइयों को जन्म दिया है क्योंकि अब हम एक कम्प्यूटरीकृत दुनिया में रहते हैं, जहां दुनिया कंप्यूटर द्वारा चलती है, या वास्तव में कमरे में बैठे लोग अपनी उंगलियों के क्लिक से दुनिया को संचालित करते हैं। आज के ऐसे विकास के दौरान, अमीर और गरीब के बीच बड़ा अन्तराल पैदा हो गया है, और सबसे महत्वपूर्ण रूप से मनुष्य और प्रकृति के बीच अन्तराल पैदा हो गया है।

प्रकृति के सामान्य रूप से कार्य करने के लिए उस पर रहने वाले सभी जंतु के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। यह संतुलन अब मानवीय लालच और पृथ्वी के अन्य जीवित और निर्जीव घटकों पर शोषण के कारण बाधित हो गया है। जनसंख्या विस्फोट और औद्योगीकरण ने पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन पर भारी प्रभाव डाला है। सभी प्राकृतिक चक्र बाधित हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप अभूतपूर्व वर्षा, बादल फटना, अचानक बाढ़, ग्लोबल वार्मिंग, हिमस्खलन आदि होते हैं। विकास के कारण पृथ्वी और प्रकृति पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों की एक अंतहीन सूची हो सकती है।

विकास योजनाकार प्रकृति की सुरक्षा के लिए उनके सामने निर्धारित मानदंडों और कानूनों की अनदेखी करते हैं क्योंकि एकल प्रभाव ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचाता है। हालाँकि, वे यह समझने में असफल रहे कि हर एक प्रभाव पृथ्वी के अंतिम बड़े विनाश का कारण बनेगा। एक दिन ऐसा आएगा जब हमारे आसपास कोई अन्य जीवित प्राणी नहीं बचेगा, जिसका अर्थ है कि दुनिया अब जीवन के अस्तित्व के लिए उपयुक्त नहीं रहेगी। और वह दिन अमीर और गरीब दोनों के लिए समान रूप से कयामत का दिन होगा।

विकास और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने की जिम्मेदारी हर व्यक्ति की है। एक आम आदमी अनुभव कर सकता है कि यह उसकी जिम्मेदारी नहीं है क्योंकि वह फैक्टरियाँ, भवन और अपार्टमेंट बनाने के लिए जंगल नहीं काट रहा है। लेकिन उसे यह समझना चाहिए कि वह जो ईंधन खाता है, जो पानी बर्बाद करता है या जो धुआं छोड़ता है, वह प्रकृति की बीमारी में भी योगदान देता है। पेड़ों और वन भूमि का प्रतिशत काफी हद तक खराब हो गया है। पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बहाल करने का पहला और प्रमुख समाधान अधिक पेड़ लगाना और बंजर भूमि को वन भूमि में बदलना है।

"देर-सवेर, हमें यह मानना होगा कि पृथ्वी को भी प्रदूषण के बिना जीने का अधिकार है। मानव जाति को यह जानना चाहिए कि मनुष्य धरती माता के बिना नहीं रह सकते, लेकिन यह ग्रह मनुष्यों के बिना रह सकता है।"

रिश्ता किताबों से

श्री अनीश कुमार
सुपुत्र - श्री नवल किशोर राय
(एम.टी.एस.)

मोबाइल फोन घर का छोटा बच्चा,
किताबों से ध्यान छीन चुका।
धुंधला हो चुका है रिश्ता किताबों से,
अब उंगलियों पर वो थूक नहीं रहती जबान की, पन्ने पलटने को,
अब तो एक स्वाइप ही काफी है।

वो दिन जब किताबें खोलते ही, आँखें बंद हो जाती थी (नींद),
अब मोबाइल खुलते ही, आँखें तक नहीं पलकती।
किताबें झांकती है बंद अलमारी के शीशे से,
कि महीनों अब मुलाकातें नहीं होती।
जो महक किताबों से मिला करती थी,
वो महक मोबाइल फोन से कहाँ मिलती।

गुरुवाणी

श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.
कनिष्ठ अनुवादक

मेरा नाम विजय लक्ष्मी है और मैं प्रधान लेखाकार महोदय के कार्यालय मेघालय, शिलांग में एक कनिष्ठ अनुवादक हूँ। विज्ञान की विद्यार्थी होने के बावजूद एक अनुवादक बनने तक का सफर मेरे लिए बहुत उतार - चढ़ाव भरा रहा है। अपने जीवन की कुछ यादें मैं यहाँ प्रस्तुत करना चाहती हूँ। साथ ही अपने गुरुजनों को नमन करती हूँ, जिनके अमूल्य उपदेशों ने मुझे अपनी जिंदगी में सदैव प्रयत्नशील रहना सिखाया।

केमिस्ट्रि में अपनी डिग्री प्राप्त करने के बाद आगे क्या करना है इसके बारे में मुझे कुछ ज्यादा अंदाजा नहीं था। ऐसे में मुझे मेरे कॉलेज के हिंदी प्रोफेसर श्री सतीश जी की याद आई जिन्होंने मुझे हिंदी में एम. ए. करने का सुझाव दिया था। क्योंकि एक केरलीय होने के बावजूद भी, हिंदी भाषा में मेरी पकड़ अच्छी थी। इसलिए मैंने हिंदी में एम. ए. करने का निश्चय किया।

पहले - पहले तो मुझे हिंदी साहित्य के लेक्चर सुनकर बहुत नींद आती थी। लेकिन धीरे - धीरे मेरी अभिरुचि बढ़ने लगी और मैं पूरी तरह एक हिंदी विद्यार्थी बन गई।

एक दिन क्लास में मेरी प्रोफेसर शशिकला जी ने हमें अपने जीवन की एक कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि - अपनी नौकरी के इंटरव्यू के पास न कर पाने पर वे रोते - रोते सो गई और उन्होंने एक सपना देखा, कि वे एक क्लास में खड़ी बच्चों को पढ़ा रही है, जो आगे जाकर वाकई में सच भी हुआ। तब उन्होंने हम से कहा कि "जीवन में चाहे कितनी बार भी हम पराजित हो जाएँ हमें निराश नहीं होना चाहिए बल्कि उससे प्रेरणा लेकर कड़ी मेहनत करते हुए आगे बढ़ना चाहिए, जो हमारा है वह समय आने पर हमें जरूर मिलेगा।"

उनके इन शब्दों ने मेरे जीवन पर बहुत प्रभाव डाला है जिससे एक अनुवादक बनने की मेरी इच्छा हमेशा बनी रही और अपने तीन प्रयासों में असफल होने के बाद चौथी बार मैंने सफलता प्राप्त की और आज मैं कनिष्ठ अनुवादक के पद पर एक महीना पूरा करने जा रही हूँ।

साथ ही, अपने पिता और पति के प्रोत्साहन, गुरुजनों के आशीर्वाद और दोस्तों के प्यार ने मुझे कठिनाइयों में जो सहारा दिया है, उसका आज मैं सस्नेह स्मरण करती हूँ।

जीवन

श्रीमती वीणा कुमारी राय
पत्नी - श्री विजय कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

जीवन एक नदी है,
खुद धारा बना बहती।
सुख - दुख दो किनारे है,
कभी इस पार, तो कभी उस पार है।।

पर इस में जो पलता जीवन,
दिल में उमंगे भी साथ है।
लहरें चट्टानों से नहीं डरती है,
अपनी धुन में मौजे गुन - गुनाती है।।

बहती रहती कभी ना थकती,
आस लिए मन में।
पूछती है रास्ता पवन से,
जाना है किस अंत को।।

सहती है सूरज की गर्मी को,
और चंदा की सर्दी को।
नाव भंवर के उस पार लगाये,
खेवइयाँ बैठ बिंदू सहाये।।

मां की यादें

श्री घनश्याम कुमार
भाई - श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

मन कहता है अब लौट चलें,
सांझ हुई अब घर चले ।
छोड़कर जब निकला था सफल होने,
तो खुशियां मां की छीनी थी।
जाते हुए देखी थी वह,
तो नम उसकी आंखें थी।।

आँसू मां के ना पोंछ सका,
कामयाबी की लालच में ।
दुख ना मां का देख सका,
कामयाबी की लालच में ।
मोह के बंधन तोड़ के सारे,
निकला था आजाद पंछी बनने ।।

छोटे-छोटे पंखों से,
आसमान को नीचा दिखलाने ।
जब रास न आई दुनिया को,
मेरी यह शैतानी ।
काट दिया मेरे पंखों को,
अपने अभिमानों से ।।

मन कहता है अब लौट चलें,
सांझ हुई अब घर चलें।
सिखलाई मां की अच्छी बातें,
साथ लेकर आया था ।
हृदय तुम अपना कोमल रखना,
मां ने हमको सिखलाया था ।।

पर बदली हुई है यहां रंग हवा की,
मन सबके मैले हैं ।
कोमल हृदय का क्या करूं,
सभी दिल पत्थर लेकर बैठे हैं ।
हर पल बस कोसता खुद को,
क्यों ना रोका मां ने मुझको।।

क्यों सौंप दिया मुझको,
इस जालिम दुनिया में।
शायद तीव्र थी जिद ही मेरी,
मां ने हार माना था ।
सौंपने का मन ना होगा उनका,
आंचल से जो बांध के पाला था ।।

मन कहता अब लौट चलें,
सांझ हुई अब घर चले ।
चौखट पर बैठी मेरी मां होगी,
इंतजार में आंखें नम होगी ।
कोमल हृदय वाली मेरी मां,
वियोग न मेरा सह पाएगी ।।

घर जाना ही अब सही होगा,
एक पल भी बैठना अब कठिन होगा ।
मां के हाथों की रोटी खाए,
गुजरे कई दिन साल हुए ।
खाए तो पकवान बहुत पर,
मिला ना स्वाद मां के हाथों का ।
मन कहता अब लौट चलें,
सांझ हुई अब घर चले ।।

रूस और युक्रेन के बीच महायुद्ध

श्री राहुल ढाका
डी. ई. ओ.

जैसा कि हम जानते है **24** फरवरी **2022** को दो यूरोपीय देश युक्रेन और रूस के बीच एक बड़े युद्ध की शुरुआत हुई जोकि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह सबसे बड़ा यूरोपीय युद्ध बताया जा रहा है। यह युद्ध रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के द्वारा 'विमुद्रीकरण' और 'अनाजीकरण' को लेकर शुरु हुआ। रूस के इस आक्रमण से दोनों देशों को भारी नुकसान हुआ क्योंकि रूस की अर्थव्यवस्था और सैन्य शक्ति मजबूत होने से युक्रेन को ज्यादा क्षति हुई। सैंकड़ों की संख्या में लोग मारे गए और हजारों देश छोड़कर चले गए। कुछ समय के बाद दोनों देश जमीनी आक्रमण से हवाई आक्रमण तक पहुँच गए जिसके कारण रूस के राष्ट्रपति ने युक्रेन के खेरसॉन और मारियुपोल पर अपना कब्जा करने का दावा किया। जोकि ये कब्जा अवैध था। युद्ध निरंतर चलता गया और युक्रेन ने अपनी सैन्य शक्ति से खेरसॉन को पुनः अपने कब्जे में ले लिया।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दोनों देशों के बीच चल रहे इस आक्रमण की बहुत निंदा की गई। यह देखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा गठित (बैठक) हुई जिसमें राष्ट्रपति पुतिन पर आरोप लगाते हुए अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने रूस को सैन्य अभियानों को निलंबित कर दिया। यह सब कुछ देखते हुए कई देशों ने रूस का विद्रोह करते हुए उसके साथ आयात-निर्यात व अन्य आर्थिक सहायता करने से इन्कार कर दिया। वही दूसरी ओर युक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की की मदद के लिए कई देश सामने आए और युक्रेन की मानवीय और सैन्य से मदद की। इस आक्रमण से रूस में स्थापित हजारों विदेशी कंपनी रूस छोड़कर चली गई।

दोनों देशों के बीच यह महायुद्ध इस हद तक पहुँच गया है कि कोई भी देश पीछे हटने का नाम नहीं ले रहा है। जिसके कारण दोनों देशों की अर्थव्यवस्था जी.डी.पी. अन्य देशों की तुलना में काफी नीचे आ गई है। दोनों देश अर्थव्यवस्था की लिस्ट में बहुत नीचे आ गए हैं। यदि यह युद्ध आज भी समाप्त हो जाता है तब भी दोनों देशों को ठीक करने में काफी समय लग जाएगा। यह दोनों देशों का निरंतर और एक लंबा संघर्ष है। इस युद्ध का मुख्य बिंदु क्रीमिया की स्थिति और डोनवास के कुछ हिस्सों पर रहा है। जोकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ये दोनों युक्रेन के हिस्से हैं। जबकि रूस इन्हें अपना होने का दावा करता है।

"असम के चराईदेव मोईदाम"

श्रीमती स्निग्धा फुकन
हिन्दी अधिकारी

भारत ने पिछले दशक में **13** विश्व धरोहर संपत्तियों को सफलतापूर्वक शामिल किया है और अब वह सर्वाधिक विश्व धरोहर संपत्तियों के मामले में विश्व में छठे स्थान पर है।

असम के आहोम राजवंश की अद्वितीय **700** वर्ष पुरानी टीला - दफनाने की प्रणाली, चराईदेव मोईदाम को **26** जुलाई **2024** को आधिकारिक तौर पर संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) की विश्व धरोहर सूची में शामिल कर लिया गया है। इस प्रकार यह इस प्रतिष्ठित सूचकांक में शामिल होने वाली भारत की **43**वीं संपत्ति बन गई है ।

मोईदाम पूर्वोत्तर का पहला ऐसा स्थल है जिसे सांस्कृतिक श्रेणी में विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी गई है । असम में प्राकृतिक श्रेणी में दो अन्य ऐसे स्थल हैं - काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और मानस राष्ट्रीय उद्यान, दोनों को बाघ अभ्यारण्य में अपग्रेड किया गया है ।

चराईदेव का मतलब है "पहाड़ियों पर चमकता हुआ शहर"। यह असम की विशेष सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत की धरोहर भी है। यह शताब्दियों तक शासन करने वाले आहोम राजवंश की पहली राजधानी थी, जो आज भी भारतीयों का सिर गर्व से ऊंचा करती है। आहोम राजवंश के लोग अपने पूर्वजों के शव और इसमें हथियार, आभूषण, घरेलू सामान मोईदाम में रखते थे। मोईदाम एक पहाड़ जैसी संरचना है, जो ऊपर से मिट्टी से ढकी होती है और नीचे एक या एक से अधिक कमरे होते हैं। अब तक खोजे गए **386** मोईदामों में से, चराईदेव में **90** शाही दफन इस परंपरा के सबसे अच्छे संरक्षित, प्रतिनिधि और सबसे पूर्ण उदाहरण हैं। यह आहोम साम्राज्य के राजाओं और गणमान्य लोगों के प्रति सम्मान का प्रतीक है। चराईदेव के मोईदाम असम के ताई - आहोम समुदाय की गहरी आध्यात्मिक आस्था, समृद्ध, सभ्यतागत विरासत एवं स्थापत्य कला का प्रतीक हैं। अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान दिखाने का यह तरीका बहुत अनूठा है। इस स्थान पर सामुदायिक पूजा भी की जाती थी। आहोम साम्राज्य के सिद्धांत और मान्यताएं इतनी मजबूत थीं कि उन्होंने **1228** ईस्वी से **1828** तक लगभग **600** वर्षों तक असम पर शासन किया था। किसी साम्राज्य का इतने लंबे समय तक चलना एक बड़ी उपलब्धि है।

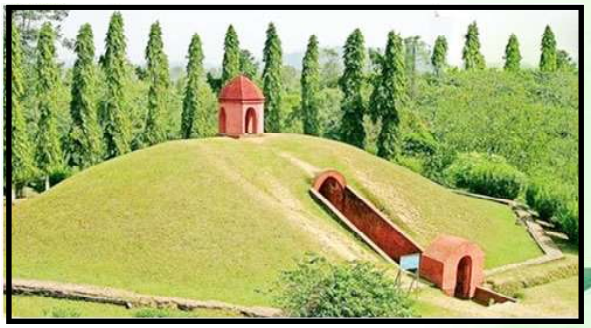

मोईदाम पूर्वोत्तर भारत में ताई - आहोम राजवंश द्वारा स्थापित एक शाही टीला दफन कब्रिस्तान है। पूर्वी असम में पाटकाई पर्वतमाला की तलहटी में स्थित, संपत्ति में ताई - आहोम के लिए पवित्र विशेषताएं शामिल हैं और उनकी अंत्येष्टि परंपराओं को प्रदर्शित करती है। पूर्वी असम में **600** वर्षों तक, ताई-आहोम ने पहाड़ियों, जंगलों और पानी की प्राकृतिक स्थलाकृतियों को बढ़ाते हुए मोईदाम (दफनाने के टीले) बनाए, जिससे एक पवित्र भूगोल का निर्माण हुआ। बरगद के पेड़ और ताबूतों और छाल की पांडुलिपियों के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले पेड़ लगाए गए और जल निकाय बनाए गए। उस स्थान के भीतर विभिन्न आकारों की नब्बे मोईदाम - ईंट, पत्थर या मिट्टी से निर्मित खोखली कब्र पाई जाती हैं। इनमें राजाओं और अन्य राजघरानों के अवशेष, साथ ही भोजन, अलंकार सहित अन्य मूल्यवान सामग्री भी शामिल हैं। "मे-डाम-मे-फी" और "तर्पण" की ताई-आहोम रस्में चराईदेव मोईदाम में प्रचलित हैं।

चराईदेव मोईदाम के भीतर नब्बे मोईदाम पाए गए हैं, जो ऊंची भूमि पर स्थित हैं। मोईदाम का निर्माण ईंट, पत्थर या मिट्टी (ताक) से बनी एक खोखली तिजोरी के ऊपर एक मिट्टी का टीला (गा-मोईदाम) बनाकर किया गया है, और एक अष्टकोणीय दीवार (गढ़) के केंद्र में एक मंदिर (चाउ चा ली) के शीर्ष पर है। यह आकृति ताई ब्रह्मांड का प्रतीक है। शीर्ष पर स्थित मंदिर मुंगक्लांग

है, जो एक मध्य स्थान है, जो स्वर्ग - पृथ्वी सातत्य स्थापित करने वाली सुनहरी सीढ़ी का प्रतीक है। तहखानों में राजाओं और अन्य शाही व्यक्तियों के दफन या दाह संस्कार के साथ - साथ भोजन, अलंकार तथा अन्य मूल्यवान सामग्री होती हैं। यह एक भौतिक स्थान है, जहां यह माना जाता है कि ताई-आहोम राजघराने देवता बन गए, जो स्वर्ग - पृथ्वी सातत्य का प्रतीक है।

मोईदाम आहोम राजवंश की शाही अंत्येष्टि वास्तुकला और रीति-रिवाजों के **600** वर्षों का गवाह है और **13** वीं से **19** वीं शताब्दी ईस्वी तक ताई-आहोम सांस्कृतिक परंपराओं का प्रमाण है। मोईदाम के पुरातात्विक अवशेष ताई-आहोम मान्यताओं और परंपराओं की वास्तुकला एवं अभिव्यक्तियों के प्रमाण हैं। इस स्थान पर ताई-आहोम की निरंतर अनुष्ठान प्रथाएं भी इस संबंध में महत्वपूर्ण हैं।

आहोम राजवंश की टीला-दफन प्रणाली ताई-आहोम कब्रिस्तान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो ताई-आहोम अंत्येष्टि परंपराओं और संबंधित ब्रह्मांड विज्ञान का मूर्त रूप से प्रतिनिधित्व करता है। लगभग **600** वर्षों तक, ताई-आहोम ने अपनी ब्रह्माण्ड संबंधी मान्यताओं के अनुसार इस परिदृश्य को गढ़ा। लहरदार स्थलाकृति को खाइयों की खुदाई करके और मोईदाम के साथ गर्तों को चिह्नित करके बढ़ाया गया था। पवित्र वृक्षों को लगाकर प्राकृतिक वनस्पति को बढ़ाया गया, और उन्हें भरने के लिए जलधाराओं को प्रवाहित करके जल निकायों को जोड़ा गया। ये विशेषताएं मिलकर ताई ब्रह्मांड और स्वर्ग-पृथ्वी सातत्य का प्रतीक हैं।

सत्यता- चराईदेव मोईदाम एक पवित्र परिदृश्य है, जिसमें निर्मित शाही दफन टीले हैं, जो ताई - आहोम मान्यताओं को दर्शाते हैं। मोईदाम काफी हद तक बरकरार हैं, जैसा कि ग्रामीण परिदृश्य है। शाही इतिहास, ताई-आहोम विश्व दृष्टिकोण और दैनिक जीवन का विवरण प्रदान करते हैं, जिसमें अंत्येष्टि अनुष्ठान और आध्यात्मिक संघ शामिल हैं, साथ ही मोईदाम के निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री और श्रम का विवरण भी शामिल है।

स्थानीय समुदाय मोईदाम को पवित्र दफन स्थल मानते हैं और सक्रिय रूप से उनकी रक्षा करते हैं। स्थानीय समुदायों की भागीदारी के महत्व को मान्यता देते हुए, सामुदायिक भागीदारी के लिए अतिरिक्त रणनीतियों की रूपरेखा तैयार की गई है।

यह स्थान वास्तव में देखने लायक है क्योंकि यह प्राचीन युग के दौरान इस स्थान की सुंदरता और महिमा की जानकारी देता है। आपको उस समय के कारीगरों और शिल्पकारों द्वारा किए गए कुछ उत्कृष्ट कार्य देखने को मिलते हैं।

इस स्थान का मुख्य आकर्षण इसका मोईदाम हैं जिनमें आहोम शासकों की जीवनशैली और संस्कृति के बारे में बहुत सारी जानकारी दर्शाई गई है। आप भूमिगत तहखानों पर की गई पुष्प वास्तुकला से मंत्रमुग्ध हो जाएंगे और सभी कक्ष मिट्टी के टीलों से ढंके हुए हैं। देश के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली इन खोई हुई आत्माओं को श्रद्धांजलि देने के लिए लोग दूर-दूर से यहां आते हैं। पास में ही सुकाफा पार्क नाम का एक पार्क है, जहां बच्चों के लिए मनोरंजन के कई विकल्प हैं।

चराईदेव मोईदाम तक शिवसागर शहर से सड़क मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है, जो असम के प्रमुख शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। निकटतम हवाई अड्डा जोरहाट हवाई अड्डा है, और निकटतम रेलवे स्टेशन शिमलुगुड़ी जंक्शन है।

हिंदी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की विविध झलकियां

वर्ष 2023-24 में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं की विविध झलकियां

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 में प्रतिभागिता करते हुए कार्यालय के अधिकारी / कर्मचारीगण

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग द्वारा दिनांक 5 एवं 6 अगस्त 2024 को आयोजित पूर्वोत्तर क्षेत्र लेखापरीक्षा एवं लेखा कार्यालयों की संयुक्त क्षेत्रीय कार्यशाला के अवसर पर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय सहित शीर्ष अधिकारीवृंद की स्थिर छवि

"ऑडिट दिवस 2023" के शुभ अवसर के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं सहित शिलांग स्थित भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के क्षेत्रीय कार्यालयों के उच्चाधिकारीवृंद

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2024 के शुभ
अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए
प्रधान महालेखाकार महोदय

इस कार्यालय द्वारा आयोजित वार्षिक एक दिवसीय खेलकूद समारोह,
2024 की विविध झलकियां

श्री आनंद कौशल, सेवा निवृत्त वरिष्ठ लेखा अधिकारी को खेलों के महत्व में अहम भूमिका निभाने हेतु सम्मानित करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय

एक दिवसीय खेलकूद समारोह, 2024 में विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय

खेलकूद में विजयी प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय

खेलकूद में विजयी प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान करते हुए उप महालेखाकार महोदय

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में प्रशंसनीय कार्य हेतु 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' (नराकास), शिलांग से प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए डॉ. डी. अनिश, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

बिग एफ. एम. द्वारा आयोजित "बिग फुटसल फेस्ट 2024" में महालेखाकार मेघालय टीम चैंपियन घोषित ।

“उम्न्गोट नदी”, जिसे “डावकी नदी” भी कहा जाता है, भारत के मेघालय राज्य में बहने वाली एक नदी है। “उम्न्गोट नदी” को भारत की सबसे स्वच्छ नदी माना जाता है।